(श्री सहजानंद स्वामी लिखित)

çàæÿææÐ~æè

(नित्य नियम सहित)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री
१००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीनी
आज्ञाथी

प्रकाशक :
महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर,
कालुपुर, अहमदाबाद-३८० ००१.

प्रकाशक
स्कीम कमिटी वती
महंत स्वामी
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी

मूल्य : रु। ७-००

तृतीय संस्करण

नकल : १०००

मुद्रक : श्री स्वामिनारायण प्रिन्टिंग प्रेस
श्री स्वामिनारायण मंदिर,
कालुपुर, अहमदाबाद-३८० ००१.

अनुक्रमणिका

क्रम	विगत	पेज नंबर
१.	शिक्षापत्री	१
२.	गणपति की आरती	६४
३.	हनुमानजी की आरती	६५
४.	आरती	६६
५.	धून	६७
६.	श्री राधिकाकृष्णाष्ट	६८
७.	प्रार्थना	६९
८.	थाळ	७२
९.	मुखवास	७४
१०.	चेष्टा के पदो	७५
११.	संध्या आरती	१०५
१२.	राग - बिहाग	१०६
१३.	राग गरबी पद	१०६
१४.	एकादशी के पद	१०७
१५.	प्रेमानंद स्वामी के कीर्तनो	११३
१६.	ब्रह्मानंद स्वामी के कीर्तनो	११८
१७.	मुक्तानंद स्वामी के कीर्तनो	१२२
१८.	काफी पद-१	१३०
१९.	भक्तकवि नरसिंह के कीर्तनो	१३२
२०.	जेराम भक्त के कीर्तनो	१३४
२१.	मावदान के कीर्तनो	१३७
२२.	धीरुभा के प्रभातियुं	१४१
२३.	स्वयंप्रकाश के कीर्तनो	१४२
२४.	गोपाल भक्त के कीर्तनो	१४३
२५.	भक्तकवि वसंत के कीर्तनो	१५१
२६.	देवानंद स्वामी के कीर्तनो	१५४
२७.	प्रीतम के कीर्तनो	१६१
२८.	श्री नारायणकवचम् मंत्र	१६४
२९.	जनमंगल स्त्रोत्र	१७१
३०.	श्री हनुमत्स्तोत्रम्	१७६

मंगलाचरण

मंगल मूर्ति महा प्रभु, श्री सहजानंद सुखरुप,
भक्ति धर्मसुत श्रीहरि, समरुं सदाय अनुप,
परम कृपाळु छो तमे, श्रीकृष्ण सर्वाधीश,
प्रथम तमने प्रणमुं, नमुं वारंमपार हुं शीश.

अवतीर्य निजाक्षरात्परादिह मूर्त्या बदरीवनेस्थितिः ।
भुविभारत जीवशर्मणे नरनारायण देव पाहि माम् ॥१॥
यदुपर्य भवत्कृपातव स नरो दुष्टु महार्हतिक्षणम्० ।
न परः सुरसत्तमोऽन्यथा नरनारायण० ॥२॥
प्रथितं च बृहद्व्रतं त्वया जनताया निजधामलब्धये ।
अवबोधनम् उत्तमं भुवि नरनारायण० ॥३॥
जगतो जननं हि पालनं प्रलयं चापि करोषि नित्यदा ।
रजसा तमसा च सत्त्वतो नरनारायण० ॥४॥
ऋषि रुपधरं तपश्चरं ह्यवमन्येत कदापि कश्चन ।
स भवेत्सततं च नारकी नरनारायण० ॥५॥
तव मूर्तिरियं सुखात्पये जनताया, कलितापशान्तये ।
मरणस्य जयाय नित्यदा नरनारायण० ॥६॥

जगदन्यतनुस्तथावितुं धरसि त्वं य युगेयुगेऽद्यवै ।
हरिकृष्ण तनु स्त्वयाधृता नरनारायण० ॥७॥
विधि शंभुमुखामर व्रजश्चरणौते सततं समर्थति ।
परमादरतश्च चिंतति नरनारायण देव पाहि माम्० ॥८॥

विश्वेश छो सकळ विश्व तणा विधाता,
दाता तमे सकळ मंगळ शांतिदाता,
माटे तमारुं करुणानिधि सत्य नाम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम.
अज्ञानपाश करुणा करी कापी नाखो,
नित्ये प्रभु तव पदे मम वृत्ति राखो,
भक्तोनुं पालन करो प्रभु सर्व याम्,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम.

जे उत्पत्ति तथा स्थिति लय करे वेदो स्तुति उच्चरे, जेना रोम सुछिन्द्रमां अणुसंमा ब्रह्मांड कोटी फरे, माया काळ रवि शशी सुरगणो आज्ञा न लोपे क्षण, एवा अक्षरधामना अधिपति श्री स्वामिनारायण

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम ॥

श्री शिक्षापत्री

अपने सत्संगीजनोंके प्रति शिक्षापत्री लिखते हुए भगवान श्री सहजानंद स्वामी, प्रथम अपने इष्टदेव श्री कृष्ण भगवान का ध्यान रुप मंगलाचरण करते हैं –

"जिनके वामभागा में राधिकाजी विराजमान और जिनके वक्षःस्थल में लक्ष्मीजी विद्यमान तथा जो वृन्दावन विहारी है, ऐसे भगवान श्रीकृष्ण का हम अपनें हृदय में ध्यान करते हैं ॥१॥

वड़ताल गाँव में निवास करने वाले हम (सहजानन्द स्वामी) विभिन्न देशों में निवास करनेवालें हमारे आश्रित सभी सत्संगोजनोंके प्रति शिक्षापत्री

लिखते हैं ॥२॥

(हमारे) पिता श्री धर्मदेव से हैं जन्म जिनका, ऐसे जो हमारे भाई रामप्रतापजी तथा ईच्छारामजी, उनके पुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी (जिन्हें हमने अपने दत्तक पुत्र मानकर सभी सत्संगीजनों के आचार्य पद पर स्थापित किये हैं ।) ॥३॥

तथा हमारे आश्रित जो मुकुंदानन्दजी आदि नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं हमारे आश्रित मयाराम भट्ट आदि जो गृहस्थ सत्संगी ॥४॥

तथा हमारे आश्रित जो सधवा तथा विधवा स्त्रीयाँ तथा मुक्तानन्दजी आदि सर्व साधुजन ॥५॥

वे सभी, अपने धर्मकी रक्षा करनेवाले शास्त्रसम्मत एवं श्रीमन्नारायणकी स्मृति सहित हमारे

शुभ आशीर्वादों को वाँचे ॥६॥

इस शिक्षापत्री लिखने का जो उद्देश्य हैं, उसको सर्व एकाग्र मन से धारण करें । यह शिक्षापत्री जो हमने लिखी है, वह सर्व जीवों का हित करनेवाली है ॥७॥

श्रीमद् भागवत पुराण आदि सत्शास्त्रों द्वारा जीवों के कल्याण के लिए प्रतिपादित अहिंसा आदि सदाचारों का जो लोग पालन करते हैं, वे इस लोक में तथा परलोक में उत्तम सुखको प्राप्त करते हैं ॥८॥

और उनसदाचारों का उल्लंधन करके जो मनुष्य मनमाना आचरण करते हैं, वे कुबुद्धिवाले हैं और इस लोक में तथा परलोक में निश्चय ही बडे कष्ट को प्राप्त करते है ॥९॥

इसलिये हमारे शिष्य, ऐसे आप लोग,

प्रीतिपूर्वक इस शिक्षापत्री के अनुसार ही निरंतर सावधान होकर आचरण करें परंतु इस शिक्षापत्री का उल्लंघन कदापि न करे ॥१०॥

अब हम उस आचरण की रीति बतलाते हैं- कि जो हमारे सत्संगीजन हैं वे कदापि किसी भी जीव-प्राणी मात्रकी हिंसा न करें और जान बूझकर जूँ, खटमल, चांचड आदि सूक्ष्म जीवोंकी भी हिंसा कभी न करें ॥११॥

देवयाग तथा पितृयाग के लिए भी बकरी, हिरन्, खरगोश, मच्छली आदि कीसी भी जीव की हिंसा न करें, क्योंकि सभी शास्त्रों में अहिंसा कोही परम धर्म कहा गया हैं ॥१२॥

स्त्री, धन तथा राज्यकी प्राप्ति के लिए भी किसी मनुष्य कीं हिंसा तो किसी भी प्रकार से

कदापि न करें ॥१३॥

तीर्थस्थानमें भी आत्महत्या न करें, तथा क्रोधावेशमें भी आत्महत्या न करें, यदि कोई अनुचित आचरण हो जाय तो उससे खिन्न होकर भी आत्मघात न करें, तथा जहर खाकर, गलेमें फंदा डालकर, कुएमें गिरकर या पर्वत पर से कूद कर, इत्यादि किसी भी प्रकार से आत्महत्या न करें ॥१४॥

माँस यज्ञ का शेष हो तो भी, आपत्काल में भी कभी न खायें और तीन प्रकारकी शराब तथा ग्याहरह प्रकारके मद्य देवताका नैवेध्य होने पर भी न पीयें ॥१५॥

अपने से कुछ अनुचित आचरण हों जाने पर अथवा किसी अन्य से अनुचित आचरण हो जाने पर क्रोधावेश में शस्त्रादि से अपने अगं का तथा दूसरे

के अंगोका छेदन न करें ॥१६॥

हमारे सत्संगी धार्मिक कार्य के लिए भी कभी चोर का कर्म न करें, तथा दूसरोंकी मालिकी के काष्ठ, पुष्प आदि चींजे भी उनकी (मालिक की) आज्ञा के बिना न लें ॥१७॥

हमारे आश्रित पुरुष तथा स्त्रीयाँ व्यभिचार न करें, जुआ आदि व्यसनों का त्याग करें, भांग, चरस तथा अफीण आदि नशीली चीजों का पान वा भक्षण भी न करें ॥१८॥

और जिसके हाथ से पकाया गया अन्न तथा जिसके पात्र का जल अग्राह्य हो उसका पकाया हुआ अन्न तथा उसके पात्र का जल श्रीकृष्णभगवानकी प्रसादी या चरणामृत के माहात्म्य से भी जगन्नाथपुरी के अलावा अन्य

स्थान पर ग्रहण न करें, जगन्नाथपुरी में जगन्नाथजी का प्रसाद लेने में कोई दोष नहीं है ॥१९॥

अपने स्वार्थकी सिद्धि के लिए भी कीसी के उपर मिथ्या अपवाद का आरोप न करें तथा किसी को गाली तो कभी न दें ॥२०॥

देवता, तीर्थ ब्राह्मण, पतिव्रता, साधु और वेद इनकी निन्दा कदापि न करें तथा न सुनें ॥२१॥

जिस देवता के आगे मदिरा तथा मांस का नैवेद्य होता हो तथा जिस देवताके आगे बकरें आदि जीवोंकी हिंसा होती हो, उस देवता का नैवेद्य न खायें ॥२२॥

रास्ते में चलते समय शिवालयादि जो देवमंदिर आवें, उनको देखकर नमस्कार करें और आदरपूर्वक उन देवों का दर्शन करें ॥२३॥

अपने अपने वर्णाश्रम के धर्म का कोई भी सत्संगी त्याग न करें तथा पर धर्मका आचरण न करें तथा पाखंड धर्मका आचरण न करें तथा कल्पित धर्मका आचरण न करें ॥२४॥

जिसके बचन सुनने से श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति और अपना धर्म, इन दोनों से पतन हो, उसके मुख से भगवान् की कथावार्ता भी न सुनें ॥२५॥

जिस सत्य वचन बोलने से अपना तथा अन्य का द्रोह हो, ऐसा सत्यवचन कदापि न बोलें और कृतघ्नीके संग का त्याग करें तथा व्यवहारकार्यमें किसी से घूस–रिश्वत न लें ॥२६॥

चोर, पापी, व्यसनी, पाखंडी, कामी तथा कीमिया आदि क्रियाओं द्वारा लोगोंको ठगनेवाले धूर्त, इन छः प्रकारके मनुष्यों का संग न करें ॥२७॥

जो मनुष्य भक्तिका अथवा ज्ञान का आलंबन लेकर स्त्री, द्रव्य तथा रसास्वाद में अत्यंत लोलुप होकर पाप कर्म में प्रवृत्त हों, ऐसे मनुष्योंका समागम न करें ॥२८॥

जिन शास्त्रोमें श्रीकृष्ण भगवान् तथा श्रीकृष्ण भगवान् के वाराहादिक अवतारों का युक्तियों द्वारा खण्डन किया गया हो, ऐसे शास्त्रों को कदापि न मानें और न सुनें ॥२९॥

बिना छना हुआ जल तथा दूध न पियें, तथा जिस जल में अनेक सूक्ष्म जंतु हो, वैसे जल से स्नानादि क्रिया न करें ॥३०॥

जो औषधि मदिरा या मांस से युक्त हो उसका सेवन कदापि न करें और जिस वैद्य के आचरण को न जानते हौ उसकी दी हुई औषधि का

भी कदापि सेवन न करें ॥३१॥

लोक तथा शास्त्रों द्वारा मलमूत्र करने के लिए वर्जित जीर्ण देवालय, नदी तालाबके घाट, मार्ग, बोए हुए खेत, वृक्ष की छाया, फूलवारी, तथा बगीचे इत्यादि स्थानोमें कदापि मलमूत्र न करें तथा थूके भी नहीं ॥३२॥

चोर मार्ग से प्रवेश न करें तथा बाहर भी न निकलें तथा मालिकी युक्त स्थान में उसके मालिक से पूछे बिना निवास न करें ॥३३॥

हमारे सत्संगी पुरुषमात्र, स्त्रियोंके मुख से ज्ञानोपदेश न सुनें तथा स्त्रियों के साथ विवाद न करें तथा राजा के साथ एवं राजपुरुषों के साथ भी कभी विवाद न करें ॥३४॥

गुरु, अत्यंत श्रेष्ठ मनुष्य समाज में प्रतिष्ठा

सम्पन्न मनुष्य, विद्वान तथा शस्त्रधारी मनुष्य, इनका अपमान न करें ॥३५॥

विचार किये बिना शीध्र कोई भी व्यावहारिक कार्य न करें लेकिन धार्मिक कार्य तो तत्काल करें तथा स्वयं जो विद्याभ्यास किया हो उसे दूसरोंको पढावें तथा प्रतिदिन सन्त समागम करें ॥३६॥

गुरु, देव तथा राजा इन तीनों के दर्शनार्थ जाते समय खाली हाथ से न जाय, किसी से विश्वासघात न करें और अपने मुख से अपनी प्रशंसा न करें ॥३७॥

जिस वस्त्रको पहनने पर भी अपने शरीरके अवयव दिखाई पडे, ऐसे दूषित वस्त्र को हमारे सत्संगी कभी धारण न करें ॥३८॥

धर्म के रहित श्रीकृष्ण भगवानकी भक्ति

सर्वथा न करें तथा अज्ञानी मनुष्यों की निन्दा के भय से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा का त्याग न करें ॥३९॥

प्रतिदिन तथा उत्सव के दिन श्रीकृष्ण भगवान के मंदिर में आये हुए सत्संगी पुरुष, मंदिरमें स्त्रियों का स्पर्श न करें तथा स्त्रियाँ पुरुष का स्पर्श न करें, मंदिर से बाहर निकलने के बाद अपनी अपनी रीति अनुसार रहें ॥४०॥

धर्मवंशी गुरु से जिन्होंने श्रीकृष्ण की दीक्षा प्रापत की है, ऐसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनो वर्णो के हमारे सत्संगी जन निरंतर गले में तुलसी की दोहरी माला धारण करें तथा ललाट, हृदय एवं दो हाथ इन चारों स्थान पर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक करें ॥४१॥

और वह तिलक गोपीचन्दन से करें अथवा भगवानकी पूजा से अवशिष्ट केसर-कुंकुमादिक से युक्त जों प्रसादी का चन्दन, उससे करें ॥४२॥

उस तिलक के मध्यमें ही गोपीचन्दन से तिलक द्रव्य से अथवा राधिकाजी एवं लक्ष्मीजी से प्रसादीभूत कुंकुम से गोल चन्द्रक करें ॥४३॥

अपने धर्म में रहते हुए जो श्रीकृष्ण भगवान के भक्त सत्शूद्र हैं, वे तो द्विजाति-ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य के समान ही तुलसीकी माला तथा उर्ध्वपुणड्र तिलक धारण करें ॥४४॥

लेकिन उन सत्शूद्रो से, अतिरिक्त, जाति से कनिष्ठअसत्शूद्र जो भक्तजन हैं वे भगवान की प्रसादीभूत ऐसे चन्दनादिक काष्ठ की दोहरी माला कंठ में धारण करें तथा ललाट में सिर्फ गोल चन्द्रक

करें परन्तु तिलक न करें ॥४५॥

जिन ब्राह्मणादिकों को, त्रिपुंड्र करना तथा रुद्राक्ष की माला धारण करना, ये दो बातें अपनी कुलपरंपरा से प्राप्त हो, और वे ब्राह्मणादिक हमारे आश्रित बने हो तो भी वे त्रिपुंड्र तथा रुद्राक्ष का कदापि त्याग न करें ॥४६॥

नारायण तथा शिवजी उन दोनों में एकात्मता ही समझें क्योंकि वेदों में उन दोनों का ब्रह्मस्वरुप से प्रतिपादन किया गया है ॥४७॥

हमारे आश्रित मनुष्य शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित आपद्धर्म को अल्प आपत्काल में प्रमुख रुप से कदापि ग्रहण न करें ॥४८॥

हमारे आश्रित सत्संगी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व ही निद्रा का त्याग करें तथा श्रीकृष्ण भगवान्

का स्मरण करके शौचविधि आदि क्रिया करें ॥४९॥

तत्पश्चात् एक स्थान में बैठकर दन्तशुद्धि करें, बाद में पवित्र जल से स्नान करके धोये हुए दो वस्त्र-एक दोती तथा एक उत्तरीय धारण करें ॥५०॥

इसके बाद पवित्र पृथ्वी पर बिछाये हुए शुद्ध, दूसरे अपवित्र आसन से अस्पृष्ट तथा जिस पर अच्छी तरह से बैठा जा सके, ऐसे विस्तीर्ण आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठकर आचमन करें ॥५१॥

उसके बाद हमारे आश्रित सभी पुरुष गोल चन्द्रक सहित ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करें और जो सधवा स्त्रियाँ हो वे अपने भाल पर कुंकुम का चन्द्रक करें ॥५२॥

विधवा स्त्रीयाँ हो वे अपने भाल में तिलक

न करें तथा चन्द्रक भी न करें । उसके बाद हमारे सत्संगी मन से कल्पित चन्दन पुष्पादि उपचारों द्वारा श्रीकृष्ण भगवानकी मानसी पूजा करें ॥५३॥

इसके बाद श्री राधाकृष्ण की चित्र-प्रतिमा का आदरपूर्वक दर्शन करके, नमस्कार करके अपनी शक्ति अनुसार श्रीकृष्णके अष्टाक्षर मन्त्रका जप करें और बाद में अपना व्यावहारिक कार्य करें ॥५४॥

और हमारे सत्संगी जनोंमें राजा अंबरीष के समान जो आत्मनिवेदी उत्तम भक्त हो वे भी पूर्वोक्त क्रमानुसार मानसी पूजा पर्यंत सभी क्रिया अवश्य करें ॥५५॥

वे आत्मनिवेदि भक्त पाषाण या धातु से निर्मित श्रीकृष्ण भगवान्की प्रतिमा का अथवा शालिग्राम का पूजन देशकालानुसार यथाशक्ति

उपलब्ध चन्दन, पुष्प, फलादि उपहारों से करें और बाद में श्रीकृष्ण भगवान से अष्टाक्षर मन्त्र का जप करें ॥५६॥

उसके बाद अपनी शक्तिके अनुसार श्रीकृष्ण भगवान्के स्तोत्र अथवा ग्रंथका पाठ करें और जो संस्कृत नहीं पढें है वे श्रीकृष्ण भगवान् का नाम कीर्तन करें ॥५७॥

तदनन्दर श्रीकृष्ण भगवान् को नैवेद्य अर्पण करके प्रसादीभूत अन्न का भक्षण करें तथा वे आत्मनिवेदी वैष्णव निरंतर प्रेमपूर्वक भगवान् की सेवा में तत्पर रहें ॥५८॥

निर्गुण अर्थात् माया के सत्वादिक तीन गुणों से रहित ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान, उसके सम्बन्ध से आत्मनिवेदी भक्तों की सभी क्रियाएं निर्गुण हो

जाती हैं । उसी कारण से आत्मनिवेदी भक्त निर्गुण कहे गये हैं ॥५९॥

ऐसे आत्मनिवेदी भक्त श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण किये बिना जल भी कदापि न पीयें और श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण किये बिना पत्र, कंद, फलादि चीजों का कदापि भक्षण न करें ॥६०॥

हमारें आश्रित सभी सत्संगीजन जब वृद्धावस्था से अथवा किसी भारी आपत्काल से असमर्थ हो जायें तब स्वयं से सेव्यमान जो श्रीकृष्ण का स्वरुप है, उसे अन्य भक्त को सौंपकर स्वयं अपनी शक्ति के अनुसार आचरण करें ॥६१॥

और धर्मवंश के आचार्य ने ही श्रीकृष्ण का जो स्वरुप सेवा के लिए दिया हो अथवा उस आचार्य से जिस स्वरुप की प्रतिष्ठा की हो उसी

स्वरुप की सेवा करें, इससे अतिरिक्त जो भी श्रीकृष्ण के स्वरुप हैं, वे केवल नमस्कार करने योग्य है, परंतु सेवा करने योग्य नहीं है ॥६२॥

हमारे सभी सत्संगीजन हमेशा सायंकाल भगवान्के मंदिर में जायँ और वहां (मंदिर में) श्रीराधिकापति भगवान श्रीकृष्ण के नामों का उच्च स्वर से कीर्तन करें ॥६३।.

और परम आदर से श्रीकृष्ण भगवान्की कथा वार्ता करें तथा सुनें । उत्सव के दिन विविध वाद्योंके साथ श्रीकृष्ण भगवान् का कीर्तन करें ॥६४॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगी पूर्व कथनानुसार ही प्रतिदिन आचरण करें और अपनी बुद्धि के अनुसार संस्कृत एवं प्राकृत सद्ग्रन्थोंका अभ्यास भी करें ॥६५॥

जो मनुष्य जिन गुणों से युक्त हों उस मनुष्यको विचार करके वैसे ही कार्य में प्रेरित करें परन्तु उससे विपरीत जिस कार्य के लिए जो योग्य न हो उस कार्य के लिए उसे कदापि प्रेरित न करें ॥६६॥

जो अपने सेवक हों उन सभी की निरन्तर अपने सामर्थ्यानुसार अन्न वस्त्रादि द्वारा यथायोग्य संभावना करें ॥६७॥

जो पुरुष जिन गुणों से युक्त हो, उसे वैसे ही वचनों से देशकालानुसार यथायोगय संबोधित करें परन्तु अन्यथा संबोधित न करें ॥६८॥

विनयवान हमारे आश्रित सत्संगी जन, जब गुरु, राजा, अतिवृद्ध, त्यागी, विद्वान् तथा तपस्वी ये छः व्यक्ति पधारे तब सन्मुख उठना तथा आसन अर्पण करना तथा मधुर वाणी से संबोधित करना

इत्यादि सभी प्रकार से उनका सन्मान करें ॥६९॥

गुरु, देव तथा राजाके आगे तथा सभा में पैर पर पैर चढ़ाकर न बैठें और वस्त्र द्वार घुंटनोंको बाँधकर भी न बैठें ॥७०॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगीजन अपने आचार्य के साथ कदापि विवाद न करें और अपनी शक्ति के अनुसार अन्न, धन वस्त्रादिक द्वारा उनकी पूजा करें ॥७१॥

हमारे आश्रित जो जन हैं वे अपने आचार्य का आगमन सुनकर आदर से उनके सन्मुख जायँ और वे जब गाँव से वापस पधारें तब गाँव की सीमा तक विदाई देने जायँ ॥७२॥

अधिक फलदायीं कार्य भी यदि धर्मरहित हो तो (उसको) कदापि न करें क्योंकि धर्म ही सभी

पुरुषार्थो को देनेवाले हैं । अतः किसी फलप्राप्ति के लोभ से धर्म का त्याग न करें ॥७३॥

पूर्वकालीन महापुरुषों ने भी यदि कभी अधर्म का आचरण किया हो तो उसको ग्रहण न करें किन्तु उन्होंने जो धर्माचरण किया हो उसी को ग्रहण करें ॥७४॥

किसी की भी गोपनीय बात को कहीं पर भी प्रकाशित न करें और जिसका जैसे सन्मान करना उचित हो उसका वैसे ही सन्मान करें परन्तु समदृष्टि से इस मर्यादा का उल्लंघन न करें ॥७५॥

हमारे सभी सत्संगी जन चातुर्मास में विशेष नियम धारण करें और जो असमर्थ हों वे केवल श्रावण मास में ही विशेष नियम धारण करें ॥७६॥

वे विशेष नियम कौन से हैं ? तो भगवान्की

कथाका श्रवण करना, कथा-वांचना, भगवान् के गुणोंका कीर्तन करना, पंचामृत स्नानादि द्वारा भगवान् की महापूजा करना, भगावान्के मंत्रका जप करना, स्तोत्रोंका पाठ करना, भगवान् की प्रदक्षिणा करना ॥७७॥

तथा भगवान्को साष्टांग नमस्कार करना ये आठ प्रकार के नियमों हमने उत्तम माने हैं, इनमें से किसी एक नियम की चातुर्मास में विशेषरुपसे भक्तिपूर्वक धारण करें ॥७८॥

सभी एकादशियों का व्रत तथा श्रीकृष्ण भगवान् के जन्माष्टमी आदि जन्मदिनों का व्रत आदरपूर्वक करें, तथा शिवरात्रि का व्रत भी आदरपूर्वक करें और उन व्रतों के दिन बडे उत्सव मनावें ॥७९॥

जिस दिन व्रत के निमित्त उपवास किया हो

उस दिन प्रयत्नपूर्वक दिवस की निद्रा का त्याग करें, क्योंकि जैसे मैथुन द्वारा मनुष्य के उपवास का भंग होता है वैसे ही दिवस की निद्रा से मनुष्य के उपवास का नाश होता है ॥८०॥

और सर्व वैष्णवों में श्रेष्ठ ऐसे जो श्रीवल्लभाचार्यजी, उनके पुत्र श्री विठ्ठलनाथजी ने जो व्रत एवं उत्सवो का निर्णय किया है ॥८१॥

उसी के अनुसार ही सभी व्रत एवं उत्सव मनाये जाय और उन्होंने श्रीकृष्ण की जो सेवारीति बताई हैं उसी को ही ग्रहण किया जाय ॥८२॥

हमारे सभी आश्रिति जन द्वारिका आदि तीर्थो की यात्रा अपने सामर्थ्यानुसार यथाविधि करें तथा अपनी शक्ति के अनुसार दीन जनों के प्रति दयावान बनें ॥८३॥

हमारे सभी आश्रित जन, विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती तथा सूर्य इन पांचो देवों को पूज्यभाव से मानें ॥८४॥

यदि कभी भूत प्रेतादि का उपद्रव हो तो नारायणकवच का जप करें अथवा हनुमानजी के मंत्र का जप करें परन्तु इनके सिवा अन्य किसी भी क्षुद्र देवता के स्तोत्र या मंत्र का जप न करें ॥८५॥

सूर्य एवं चन्द्रका ग्रहण लगने पर हमारे सभी सत्संगी जन अन्य सभी क्रियाओं को तत्काल छोड़कर पवित्र होकर श्रीकृष्ण भगवान् के मन्त्रका जप करें ॥८६॥

और ग्रहण-मोक्ष होने पर वस्त्र सहित स्नान करके जो हमारे गृहस्थ सत्संगी हो, वे अपने सामर्थ्यानुसार दान करें, और जो त्यागी हों, वे

भगवान्की पूजा करें ॥८७॥

चारो वर्ण के हमारे सत्संगी, वे जन्म तथा मरण के सूतक का अपने अपने सम्बन्ध के अनुसार यथाशास्त्र पालन करें ॥८८॥

और जो ब्राह्मण वर्ण के है, वे शम, दम, क्षमा तथा संतोष आदि गुणों से युक्त हो तथा क्षत्रिय वर्णके हों, वे शूरवीरता एवं धैर्य आदि गुणों से युक्त हो ॥८९॥

जो वैश्यवर्ण के है वे खेती, वाणिज्य-व्यापार तथा महाजनी आदि वृत्तियों से युक्त हो, तथा शूद्र वर्ण के हों वे ब्रह्मणादि तीनों वर्णो की सेवा आदि वृत्तियों से अपना जीवन यापन करें ॥९०॥

और जो द्विज-त्रैवर्णिक हों, वे गर्भाधानादि संस्कार, आह्निक कर्म तथा श्राद्धकर्म, इन तीनों को

अपने-अपने गृह्यसूत्र के अनुसार तथा समय एवं धनसंपत्ति के अनुसार करें ॥९१॥

और यदि कभी जाने अथवा अनजाने कोई छोटा-बडा पाप हो जाये तो अपनी शक्ति के अनुसार उसका प्रायश्चित करें ॥९२॥

चार वेद, व्याससूत्र, श्रीमद्भागवत पुराण, महाभारत में स्थित श्रीविष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र ॥९३॥

श्रीमद्भगवद्गीता, विदुर-नीति, स्कंदपुराण के विष्णुखंड में कहा हुआ श्रीवासुदेवमहात्म्यय ॥९४॥

और धर्मशास्त्रों के अन्तर्गत याज्ञवल्कय ऋषि की स्मृति, ये आठ सच्छास्त्र हमें इष्ट हैं ॥९५॥

अपना हि चाहनेवाले हमारे सभी शिष्य, उन आठों सच्छास्त्रों को सुनें और हमारे आश्रित जो द्विज

हैं, वे उन सच्छास्त्रों को पढे, पढावे और उनकी कथा करें ॥९६॥

उन आठ सच्छास्त्रों में से आचार, व्यवहार तथा प्रायश्चित इन तीनों के निर्णय के लिए मिताक्षरा टीकायुक्त याज्ञवल्कय ऋषि की स्मृति को ग्रहण करें ॥९७॥

और उन आठ सच्छास्त्रों में जो श्रीमद् भागवत पुराण है, उसके दशम तथा पञ्चम, इन दो स्कंधो को श्रीकृष्ण भगवानका माहात्म्य जानने के लिए सबसे अधिक रुप से जानें ॥९८॥

दशमस्कंध, पंचमस्कंध तथा याज्ञवल्क्य ऋषिकी स्मृति ये तीनों क्रमशः हमारे भक्तिशास्त्र, योगशास्त्र एवं धर्मशास्त्र हैं । अर्थात् दशमस्कंध भक्तिशास्त्र है, पंचमस्कंध योगशास्त्र है तथा

याज्ञवल्कय ऋषिकी स्मृति धर्मशास्त्र है, ऐसा समझें ॥९९॥

श्रीरामानुजाचार्य द्वारा किया हुआ व्याससूत्र का श्रीभाष्य तथा श्रीभगवद्गीता का भाष्य, ये दोनों हमारे अध्यात्मशास्त्र हैं ॥१००॥

इन सभी सच्छास्त्रों मे जो वचन श्रीकृष्ण भगवान् का स्वरुप, धर्म, भक्ति तथा वैराग्य इन चारों का अत्यन्त उत्कर्ष बताते हैं ॥१०१॥

उन वचनोंको अन्य वचनों की अपेक्षा विशेषरुप से मानें । श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति धर्मपूर्वक ही करना ऐसा उन सभी सच्छास्त्रों का रहस्य हैं ॥१०२॥

और श्रुति एवं स्मृतियों द्वारा प्रतिपादित सदाचारोको धर्म समझना तथा श्रीकृष्ण भगवान् के

प्रति माहात्म्यज्ञान से युक्त अपार स्नेहको भक्ति समझना ॥१०३॥

श्रीकृष्ण भगवान् के बिना अन्य पदार्थो में प्रीति-आसक्ति न हो इसे वैराग्य समझें तथा जीव, माया और ईश्वर के स्वरुपको भलीभाँति जानना इसे ज्ञान समझें ॥१०४॥

अब जीवका लक्षण बताते हैं । जो जीव है, वह हृदय में रहा है, अणु समान अत्यन्त सूक्ष्म हैं, चैतन्यस्वरुप है, ज्ञाता है, अपनी ज्ञान, शक्ति द्वारा नख-शिख पर्यन्त अपने समस्त शरीर में व्याप्त हैं तथा अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर इत्यादि लक्षणों से युक्त हैं, इस प्रकार जीव को समझना ॥१०५॥

अब माया का स्वरुप बताते हैः - जो माया है, वह त्रिगुणात्मिका है, अन्धकार स्वरुप है,

श्रीकृष्ण भगवान् की शक्ति हैं तथा जीवको देह और देह संबंधी पदार्थो में अहं ममत्त्व उत्पन्न कराने वाली है - इस प्रकार मायाको समझना ॥१०६॥

अब ईश्वरका स्वरुप बताते हैं - जो ईश्वर है, वे जैसे जीव हृदय में रहा है, वैसे ही उस जीव में अन्तर्यामी रुप से रहे है, और स्वतन्त्र हैं तथा सर्व जीवों के कर्म फल प्रदाता हैं, इस प्रकार ईश्वरको समझना ॥१०७॥

ईश्वर कौन ? वे तो परब्रह्म पुरुषोत्तम ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान् हैं, वे ही ईश्वर हैं तथा वे श्रीकृष्ण हमारे इष्टदेव हैं और उपासना करने योग्य हैं और सर्व अवतारों के कारण हैं ॥१०८॥

समर्थ ऐसे वे श्रीकृष्ण भगवान् जब राधिकाजी के साथ हो तब 'राधाकृष्ण' कहलाते हैं तथा वे ही

जब रुक्मिणी स्वरुप लक्ष्मीजी से युक्त हों तब 'लक्ष्मीनारायण' कहलाते हैं ॥१०९॥

वे ही श्रीकृष्ण जब अर्जुन से युक्त हों तब उन्हें 'नरनारायण' नाम से जानना और वे ही श्रीकृष्ण जब बलभद्रादि के साथ हों तब उन-उन नामों से कहे जाते हैं ऐसे जानना ॥११०॥

वे राधादि भक्त कभी तो श्रीकृष्ण भगवान् के पार्श्व में रहते हैं, और कभी अत्यन्त स्नेह से श्रीकृष्ण भगवान् के अंग में लीन रहते हैं, तब तो श्रीकृष्ण भगवान् को अकेले ही समझना ॥१११॥

अतएव श्रीकृष्ण भगवान् के स्वरुपों में किसी भी प्रकार का भेद न समझें और चतुर्भुज, अष्टभुज, सहस्त्रभुज इत्यादि जो भेद मालूम पडते हैं, वे तो द्विभुज ऐसे श्रीकृष्ण की

ईच्छा से ही हैं, ऐसा समझें ॥११२॥

ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान् उनकी भक्ति पृथ्वी पर के सभी मनुष्य करें और उस भक्ति से अधिक कल्याणकारी कोई अन्य साधन नहीं है ऐसा जाने ॥११३॥

श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति तथा सत्संग करना यही विद्यादि गुणों से युक्त पुरुषों के गुणों का परम फल है, अन्यथा-भक्ति तथा सत्संग, इन दोनो के बिना तो विद्वान् भी अधोगति का प्राप्त करता है ॥११४॥

और श्रीकृष्ण भगवान् तथा उनके अवतार ध्यान करने योग्य हैं तथा उनकी प्रतिमा भी ध्यान करने योग्य हैं अतः उनका ध्यान करें परन्तु मनुष्य तथा देवादि जो जीव, वे तो श्रीकृष्ण -भगवान् के

भक्त हों तथा ब्रह्मवेत्ता हों तो भी ध्यान करने योग्य नहीं हैं, अतः उनका ध्यान न करें ॥११५॥

और अपने जीवात्माको स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण, तीनों देह से विलक्षण समझकर ब्रह्मरुप से निरन्तर श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति करें ॥११६॥

और श्रीमद्भागवत पुराण के दशमस्कंध को आदरपूर्वक सुनें अथवा प्रतिवर्ष एकबार सुनें और जो पंडित हों वे उसका प्रतिदिन पाठ करें अथवा प्रतिवर्ष एक बार पाठ करें ॥११७॥

उस दशमस्कंध का पुरश्चरण अपनी शक्ति के अनुसार किसी पवित्र स्थान में करें, करावें तथा विष्णुसहस्त्र नाम आदि सच्छास्त्रों का पुरश्चरण भी अपनी शक्ति के अनुसार करें तथा करावें, यह पुरश्चरण अपने मनोवांछित फलको देने वाले हैं ॥११८॥

देव सम्बन्धी, मनुष्य सम्बन्धी तथा रोगादि सम्बन्धी कोईभी कष्टदायक आपत्ति आ पडे, तो अपनी और अन्य की रक्षा हो वैसा आचरण करें, किन्तु अन्यरीति से आचरण न करें ॥११९॥

और आचार, व्यवहार एवं प्रायश्चित इन तीनों बातों को देश, काल, अवस्था, द्रव्य, जाति और शक्ति के अनुसार जानें ॥१२०॥

हमारा मत विशिष्टाद्वैत है, हमारा प्रिय धाम गोलोक है, और उस धाम में ब्रह्मरुप से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा करना उसी को हमने मुक्ति मानी हैं, ऐसा समझें ॥१२१॥

वें पूर्वोक्त सभी धर्म, हमारे आश्रित त्यागी तथा गृहस्थ-स्त्री पुरुष-सभी सत्संगीजनों के सामान्य धर्म है, अर्थात् सभी सत्संगीजनों द्वारा समानरुप से

पालनीय हैं और अब इन सभीके विशेष धर्मोको पृथक्-पृथक् रुप से कहते हैं ॥१२२॥

अब प्रथम धर्मवंशी आचार्य तथा उनकी पत्नियों के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे बडे भाई तथा छोटे भाई के पुत्र (क्रमशः) जो अयोद्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी हैं, वे अपने समीप सम्बन्ध रहित स्त्रियों को मंत्र उपदेश कदापि न करें ॥१२३॥

और कभी उन स्त्रियों का स्पर्श न करें तथा न उनके साथ बात करें तथा किसी जीव पर क्रूरता न करें और किसी की धरोहर कदापि न रखें ॥१२४॥

व्यवहार कार्य में किसी को भी जामिनी न करें तथा कोई आपत्काल आ पडे तो भिक्षा से जीवन निर्वाह करके आपत्काल पार करे, परन्तु

किसी से कर्ज तो कदापि न लें ॥१२५॥

अपने शिष्योंने धर्म के निमित्त से जो अन्न दिया हो उसको बेचे नहीं, यदि वह अन्न पुराना हो जाय तो पुराना किसी को देकर नया लेना । इस प्रकार पुराने का नया लेना यह विक्रय नहीं माना जाता ॥१२६॥

और भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी के दिन गणपति की पूजा करें तथा आश्विन कृष्ण चतुर्दशी के दिन हनुमानजी की पूजा करें ॥१२७॥

हमारे आश्रित सभी सत्संगी जनों के धर्म की रक्षा के लिए उन सभी के आचार्य पद पर हमारे द्वारा स्थापित जो दोनों आचार्य अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी वे मुमुक्षु जनों को (भागवती) दीक्षा दें ॥१२८॥

और अपने आश्रित सभी सत्संगी जनोंको अधिकानुसार अपने अपने धर्म में रखें और साधुओ को आदरपूर्वक मानें तथा सच्छास्त्र का अध्ययन आदरपूर्वक करें ॥१२९॥

हमारे द्वारा बडे बडे मंदिरो में संस्थापित श्रीलक्ष्मीनारायणादि श्रीकृष्णके स्वरुपों की सेवा यताविधि करें ॥१३०॥

भगवान् के मंदिर में आये हुए किसी भी अन्नार्थी ऐसे हर एक मनुष्य की अपनी शक्तिकें अनुसार अन्नदान द्वारा आदरपूर्वक संभावना करें ॥१३१॥

और विद्याध्ययन के लिए पाठाशाला स्थापित करके उसमें विद्वान ब्राह्मण को रखकर पृथ्वी पर सद्विद्या का प्रवर्तन करावें क्योंकि विद्यादान से

महान् पुण्य होता है ॥१३२॥

अब अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी, इन दोनों की जो पत्नियाँ हैं वे अपने पति की आज्ञा से स्त्रियों को ही श्रीकृष्ण के मन्त्र का उपदेश करें, परन्तु पुरुषको मन्त्र उपदेश न करें ॥१३३॥

उन दोनों की पत्नियाँ अपने समीप सम्बन्ध रहित पुरुषों का स्पर्श कदापि न करें और उसके साथ बात भी न करें तथा उन्हें अपना मुख भी न दिखावें (इस प्रकार धर्मवंशी आचार्य और उनकी पत्नियों के धर्म कहे गये) ॥१३४॥

अब गृहस्थाश्रमियों के विशेष धर्म कहते हैं - हमारे आश्रित गृहस्थाश्रमी पुरुष अपने समीप सम्बन्ध रहित विधवा स्त्रियों का स्पर्श न करें ॥१३५॥

और वे गृहस्थाश्रमी पुरुष युवा अवस्था युक्त अपनी माता, बहन, एवं पुत्री के साथ भी बिना आपत्काल एकान्त स्थल में न रहें और अपनी स्त्री का दान किसी को न करें ॥१३६॥

और जिस स्त्री का किसी प्रकार के व्यवहार द्वारा राजा से सम्बन्ध हो, ऐसी स्त्री से किसी भी प्रकार के सम्बन्ध न रखें ॥१३७॥

वे गृहस्थाश्रमी अपने घर पर आये हुए अतिथि का अपनी शक्ति के अनुसार अन्नादि से सत्कार करें तथा होमादिक देवकर्म एवं श्राद्ध आदि पितृकर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार यथाविधि-जैसे उचिति हो वैसे करें ॥१३८॥

हमारे आश्रित जो गृहस्थ हैं वे माता, पिता, गुरु तथा कोई भी रोगातुर मनुष्य उनकी सेवा जीवन

पर्यन्त अपने सामर्थ्यानुसार करें ॥१३९॥

अपने वर्णाश्रम के योग्य उद्यम अपने सामर्थ्यानुसार करें और कृषिवृत्तिवाले गृहस्थ सत्संगी बैल के वृषण का उच्छेद न करें ॥१४०॥

और वे गृहस्थ सत्संगी अपने सामर्थ्य और समय के अनुसार अपने घर में जितना खर्च-व्यय होता हों उतने अन्न-द्रव्य का संग्रह करें और जिनके घर में पशु हों, वे गृहस्थ अपनी शक्ति के अनुसार घास-चारेका संग्रह करें ॥१४१॥

गाय, बैल, भेंस, घोडे आदि जो पशु, उनको यदि घासपानी द्वारा स्वयं संभाल सकें, तभी उनको रखें, अगर देख-भाल न हो सके तो उन्हे न रखें ॥१४२॥

साक्षि सहित लेख के बिना तो अपने पुत्र

तथा मित्रादिक के साथ भी पृथ्वी और घन के लेन-देन का व्यवहार कदापि न करें ॥१४३॥

और अपने अथवा दूसरे के विवाह सम्बन्धी कार्य में दिये जानेवाले धन के संबंध में साक्षी सहित लेख किये बिना केवल मौखिक वादा न करें ॥१४४॥

अपनी आय के अनुसार ही निरंतर व्यय करें परंतु उससे अधिक व्यय न करें और जो आय से अधिक व्यय करते हैं वे बहुत दुःखी होते है ऐसा सभी गृहस्थ समझें ॥१४५॥

अपने व्यवहारकार्य में जितने धन की आमदनी हो तथा जितना व्यय हो, इन दोनों को याद करके प्रतिदिन सुन्दर अक्षरों में स्वयं उनका हिसाब लिखें ॥१४६॥

और वे गृहस्थाश्रमी सत्संगी अपनी वृत्ति एवं उद्यम से प्राप्त धन-धान्यादि में से दसवाँ हिस्सा निकाल कर श्रीकृष्ण भगवान् को अर्पण करें और जो व्यवहार में दुर्बल हों वे बीसवाँ हिस्सा अर्पण करें ॥१४७॥

ऐकादशी आदि जो व्रत, उनका उद्यापन अपने सामर्थ्यानुसार यथाशास्त्र करें, क्योंकि यह उद्यापन मनोवांछित फल को देनेवाला है ॥१४८॥

श्रावण मास में श्री महादेवजी का पूजन बिल्वपत्रादि द्वारा प्रीति पूर्वक सभी प्रकार से स्वयं करें अथवा अन्य से करावें ॥१४९॥

अपने आचार्यसे तथा श्रीकृष्ण भगवानके मंदिर से कर्ज न लें और अपने आचार्य तथा श्रीकृष्णके मंदिरसे अपने व्यवहार के लिए

बरतन, गहनें एवं वस्त्रादि चीजें माँग कर भी न लावें ॥१५०॥

और श्रीकृष्ण भगवान् अपनें गुरु तथा साधुओं के दर्शन के लिए जाते समय मार्गमें पराया अन्न नहीं खाना तथा श्रीकृष्ण भगवान्, अपने गुरु एवं साधुओंके स्थानों में भी पराया अन्न नहीं खाना, क्योंकि पराया अन्न तो अपने पूण्यको हरनेवाला है। अतः अपना ही धन खर्च करें ॥१५१॥

अपने कामकाजके लिए बुलाये गयें मजदूरोंको जितना धन अथवा धान्य देने का वादा किया गया हों उतना अवश्य दें परंतु उससे कम न दें और अपने पास कोई कर्ज मांगता हों और उस कर्जको यदि चुका दिया हों तो इस बात को गुप्त न रखें तथा

अपना वंश एवं कन्यादान भी गुप्त न रखें तथा दुष्ट लोगों के साथ व्यवहार न करें ॥१५२॥

जिस स्थान में आप रहते हों उस स्थान में यदि दुष्काल, शत्रु अथवा राजा के उपद्रव आदि से सर्वथा अपनी मर्यादा को नाश होता हो या धन का नाश हो या अपने प्राण का नाश होता हो ॥१५३॥

और वह स्थान-गाँव अपनी मूल जागीर तथा वतन का हो तो भी विवेकवान हमारे सत्संगी गृहस्थ उसका त्याग करें और जहां उपद्रव न हो ऐसे अन्य देश-स्थान में जाकर सुखपूर्वक रहें ॥१५४॥

और घनवान् ऐसे जो गृहस्थ सत्संगी है, वे हिंसा-रहित विष्णु सम्बन्धी यज्ञ करें तथा तीर्थ स्थान में एवं द्वादशी आदि पर्व के दिनों में ब्राह्मण तथा साधुओं को भोजन करावे ॥१५५॥

और वे धनवान् गृहस्थ सत्संगी भगवान् के मंदिरो में बडे-बडे उत्सव करावें तथा सुपात्र ब्राह्मणों को विविध प्रकार के दान दें ॥१५६॥

हमारे आश्रित ऐसे जो सत्संगी राजा, वे धर्मशास्त्र के अनुसार अपनी प्रजा का पुत्रवत् पालन करें और पृथ्वी पर धर्म का स्थापन करें ॥१५७॥

वे राजा राज्य के सात अङ्ग, चार उपाय तथा छः गुणों को लक्षण पूर्वक यथार्थ रुप से जानें तथा तीर्थ अर्थात् गुप्तचर भेजने के स्थान, व्यवहार के ज्ञाता सभासद, दण्डनीय मनुष्य तता अदण्डनीय मनुष्य, इन सभी को उनके लक्षणों द्वारा यथार्थरुप से जाने ॥१५८॥

अब सधवा स्त्रोयं के विशेष धर्म कहते हैं- हमारे आश्रित जो सधवा स्त्रियाँ, वे अपना पति अन्ध

हो, रोगी हो, दरिद्र हो, नपुसंक हो, तो भी उसकी ईश्वर के समान ही सेवा करें और उसको कटुवचन न बोलें ॥१५९॥

वे सधवा स्त्रियाँ रुप-यौवन से युक्त तथा गुणवान् ऐसे पर-पुरुष का प्रसंग सहज स्वभाव-अनायास भी न करें ॥१६०॥

और पतिव्रता ऐसी जो सधवा स्त्रियाँ वे अपनी नाभी, जांघ और वक्षःस्थल अन्य पुरुष को दिखाई दें ऐसे ढंग से न रहें और बिना उत्तरीय वस्त्र खुले शरीर में न रहें तथा भांडलीला आदि देखने न जायँ और निर्लज्ज स्वैरिणी, कामिनी, और पुंश्चली (कुलटा) आदि स्त्रियों का संग न करें ॥१६१॥

वे सधवा स्त्रियाँ जब अपना पति विदेश गया हो तब आभूषण धारण न करें तथा सुन्दर वस्त्र

परिधान न करें और पराये घर बैठने न जायँ तथा हास्य-विनोद आदि का त्याग करें ॥१६२॥

अब विधवा स्त्रियों के विशेष धर्म कहते हैं- हमारे आश्रित जो विधवा स्त्रियाँ, वे पतिबुद्धि से श्रीकृष्ण भगवान् की सेवा करें और अपने पिता-पुत्रादि सम्बन्धीजनों की आज्ञानुसार ही रहें परन्तु स्वतन्त्रता से आचरण न केरं ॥१६३॥

और वे विधवा स्त्रियाँ अपने निक सम्बन्धरहित पुरुषों का स्पर्श कदापि न करें और अपनी युवावस्था में बिना आवश्यक कार्य, समीप सम्बन्ध रहित, युवान पुरुषों के साथ कदापि बातचीत न करें ॥१६४॥

दूध पीते बच्चे को छूने में तो जैसे पशु को छूने में दोष नहीं हैं ठीक उस प्रकार दोष नहीं हैं

तथा किसी आवश्यक कार्य के लिए किसी वृद्ध पुरुष का स्पर्श करना पडे तथा उसके साथ बोलना पडे तो उसमें दोष नहीं हैं ॥१६५॥

वे विधवा स्त्रियाँ अपने समीप सम्बन्ध रहित पुरुष से कोई भी विद्या न सीखें, और व्रत-उपवास आदि द्वारा बारबार अपने देह का दमन किया करें ॥१६६॥

और उन विधवा स्त्रियों के घर में यदि अपने जीवन पर्यन्त देह निर्वाह हो सके उतना ही धन हो तो वे उस धन का धर्म-कार्य के लिए भी दान न करें, अगर उससे अधिक हो तो दान करें ॥१६७॥

और विधवा स्त्रियाँ एक बार ही भोजन करें तथा पृथ्वी पर ही शयन करें तथा मैथुनासक्त

पशु पक्षी आदि जीव प्राणी मात्र को कदापि न देखें ॥१६८॥

वे विधवा स्त्रियां सुहागिनी स्त्री के समान वेष धारण न करें तथा संन्यासिनी एवं वैरागिनी जैसा वेष धारण न करें और विकृत-अपने देश, कुल और आचार के विरुद्ध-वेष भी कदापि धारण न करें ॥१६९॥

और गर्भपातिनी स्त्री का संग न करें और उसका स्पर्श भी न करें तथा पुरुष के शृङ्गार सम्बन्धी वार्ता कदापि न करें एवं न सुनें ॥१७०॥

और युवावस्था में रही ऐसी जो विधवा स्त्रीयाँ वे युवावस्थावाले अपने सम्बन्धी पुरुषों के साथ भी बिना आपत्काल एकान्त स्थल में न रहें ॥१७१॥

और होली न खेलें, आभूषणादिको धारण न करें तथा सुवर्णादि धातु के तारो से युक्त मलीन वस्त्रों को भी कदापि धारण न करें ॥१७२॥

सधवा तथा विधवा स्त्रियाँ बिना वस्त्र पहने स्नान न करें और अपने रजस्वलापन को किसी भी प्रकार से गुप्त न रखें ॥१७३॥

रजस्वला ऐसी सधवा तथा विधवा स्त्रियाँ, तीन दिन तक किसी मनुष्य का या वस्त्रादि का स्पर्श न करें, चौथे दिन स्नान करके ही स्पर्श करें। (इस प्रकार गृहस्थाश्रमी पुरुष तथा स्त्रियों के जो विशेष धर्म कहे गये, उनका सभी धर्मवंशी आचार्य तथा उनकी पत्नियाँभी पालन करें क्योंकि वे भी गृहस्थ हैं) ॥१७४॥

अब नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के विशेष धर्म कहते

है - हमारे आश्रित नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्री मात्र का स्पर्श न करें और स्त्रियों के साथ बोले नहीं और बुद्धिपूर्वक तो स्त्रियों की और देखे भी नहीं ॥१७५॥

और उन स्त्रियों के बारेमें कदापि चर्चा न करें और न सुनें तथा जिस स्थान में स्त्रियों का पद-संचार हो उस स्थान में स्नानादि क्रिया करने के लिए भी न जायँ ॥१७६॥

देवता की प्रतिमा के बिना दूसरी स्त्री की प्रतिमा जो चित्रित या काष्ठादि से निर्मित हो तो भी उसका स्पर्श न करें और बुद्धिपूर्वक उसि प्रतिमा को देखें भी नहीं ॥१७७॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्त्रीकी प्रतिमा की रचना कदापि न करें तथा स्त्री द्वारा अपने शरीर पर धारण किये गये वस्त्र का स्पर्श न करें और

मैथुनासक्त पशुपक्षी आदि प्राणिमात्र को जान बूजकर न देखें ॥१७८॥

स्त्री-वेश को धारण करने वाले पुरुष का स्पर्श न करें, उसकी और देखे भी नहीं और उसके साथ बोले भी नहीं और स्त्रियों को उद्देश करके भगवान की कथा, वार्ता, कीर्तन आदि भी न करें ॥१७९॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी जिससे अपने नैष्ठिक व्रत का भंग होता हो, ऐसा वचन अपने गुरु का हो तो भी उसको न माने और निरंतर धर्यवान् रहें तथा संतोषयुक्त रहें एवं मान-अभिमान रहित रहें ॥१८०॥

हठात् अपने अत्यंत समीप आनेवाली स्त्री से बोलकर अथवा उसका तिरस्कार करके भी उसे लौटा दें परन्तु समीप कदापि न आने दें ॥१८१॥

यदि कदाचित् स्त्रियों के अथवा अपने प्राण संकट में पड जायँ, ऐसे आपत्काल के समय पर तो स्त्रियों का स्पर्श करके अथवा उनके साथ बोलकर भी उस स्त्रियों की रक्षा करें तथा अपनी भी रक्षा करें ॥१८२॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी अपने शरीर पर तेल मर्दन न करें तथा आयुध धारण न करें और भयंकर वेश भी धारण न करें तथा रसना इन्द्रिय को वश में करें ॥१८३॥

जिस ब्राह्मण के घर पर स्त्री परोसने वाली हो उस घर पर भिक्षा के लिए न जायँ किन्तु जहाँ पुरुष परोसने वाला हो वहाँ जायँ ॥१८४॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी वेदशास्त्रों का अध्ययन करें तथा गुरु की सेवा करें और स्त्रियों के

समान ही स्त्रैण पुरुषों के संग का भी सर्वदा त्याग करें ॥१८५॥

और जाति से जो ब्राह्मण हो वे चमडे के पात्र से निकाला हुआ पानी कदापि न पिये तथा प्याज और लसुन आदि अभक्ष्य चीजों का भक्षण किसी भी प्रकार से न करें ॥१८६॥

जो ब्राह्मण हो वे स्नान, संध्या, गायत्री का जप, श्री विष्णु पूजा तथा वैश्वदेव, इतना किये बिना भोजन कदापि न करें । (इस प्रकार नैष्ठिक ब्रह्मचारी के धर्म कहे गये) ॥१८७॥

अब साधु के विशेष धर्म कहते हैं – हमारे आश्रित सभी साधु, नैष्ठिक ब्रह्मचारी की भाँति ही स्त्रियों के दर्शन-भाषण आदि प्रसंग का त्याग करें तथा स्त्रैण पुरुष के प्रसंगादि का त्याग करें और

काम, क्रोध, लोभ एवं मान ईत्यादि अंतःशत्रुओं को जीतें ॥१८८॥

और वे सभी ईन्द्रियों को वश में करें और रसना ईन्द्रिय को तो विशेषरुप से वश में करें । द्रव्य का संग्रह न तो स्वयं करे न तो अन्य के पास करावें ॥१८९॥

किसी की भी धरोहर न रखें और कदापि धैर्य का त्याग न करें, और अपने आवास-स्थान में स्त्री का प्रवेश कदापि न होने दें ॥१९०॥

वें साधु आपत्काल के बिना रात्रि के समय संघसाथी के सिवा कदापि न चलें और आपत्काल के बिना कदापि अकेले न चलें ॥१९१॥

और जो वस्त्र बहु मूल्यवान हों, चित्र-विचित्र चित्रों से युक्त हो तथा कुसुम्भी आदि रंगो

से रंगा हुआ हो तथा शाल-दुशाला हो और अगर वह अन्य की इच्छा से अपने को प्राप्त हुआ हो तो भी उसको धारण न करें ॥१९२॥

और भिक्षा तथा सभाप्रसंग, इन दो कार्यो के सिवा गृहस्थ के घर पर न जायँ और भगवान् की नव प्रकार की भक्ति बिना व्यर्थ काल न बितावे, निरंतर भक्ति करके ही समय व्यतीत करें ॥१९३॥

और जिस गृहस्थ के घर पर पकाये हुए अन्न को परोसने वाला पुरुष ही हो तथा स्त्रियों के दर्शनादि का प्रसंग किसी भी प्रकार से न हो ॥१९४॥

ऐसे गृहस्थ के घर पर हमारे साधु भोजन के लिए जायँ और ऊपर कहे अनुसार यदि न हो तो कच्चा अन्न माँगकर अपने हाथ से भोजन

बनाकर भगवान को नैवेद्य समर्पित करके भोजन करें ॥१९५॥

पूर्व काल में ऋषुभदेव भगवान् के पुत्र भरतजी जिस प्रकार पृथ्वी पर जड ब्राह्मण के समान आचरण करते थें ठीक उसी प्रकार परमहंस ऐसे जो हमारे साधु वे आचरण करें ॥१९६॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं साधु ताम्बूल, अफीण तथा तम्बाकू इत्यादि के भक्षण का प्रयत्नपूर्वक त्याग करें ॥१९७॥

और वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी एवं साधु गर्भाधान आदि संस्कार प्रसंग पर भोजन न करें तथा एकादशाह पर्यन्त जो प्रेत श्राद्ध उसके प्रसंग पर तथा द्वादशाह श्राद्ध में भी भोजन न करें ॥१९८॥

रोगादि आपत्काल के बिना दिन में निद्रा न करें और ग्राम्यवार्ता न करें और जान-बूझकर सुने भी नहीं ॥१९९॥

वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा साधु रोगादि आपत्काल के बिना चारपाई पर कभी न सोयें और साधुओं के आगे निरंतर निष्कपट भाव से आचरण करें ॥२००॥

और उन साधु तथा ब्रह्मचारी को यदि कोई दुष्टमतिवाले दुर्जन गाली दें अथवा मार मारे तो उसे सहन ही करें परन्तु उसके प्रतिकार में गाली न दें, मारे भी नहीं तथा जिस प्रकार उसका कल्याण हो वैसा ही मनमें चिंतन करें परन्तु उसका बुरा हो ऐसा संकल्प भी न करें ॥२०१॥

और किसी का दूत-कार्य न करें तथा चुगल-खोरी भी न करें और किसी के चारचक्षु न बनें (जासूसी न करें) तथा देह में बुद्धि और स्वजनादि में ममत्वबुद्धि न रखें (इस प्रकार साधु के विशेष धर्म कहे गयें) ॥२०२॥

इस प्रकार हमने अपने आश्रित सत्संगी-स्त्री, पुरुष सभी के सामान्य धर्म तथा विशेष धर्म संक्षेप से लिखे हैं, इन धर्मोका विस्तार हमारे सम्प्रदाय के अन्य ग्रंथो द्वारा जानना ॥२०३॥

हमने अपनी बुद्धि से सभी सच्छास्त्रों का सारांश निकाल कर यह शिक्षापत्री लिखी हैं, वह कैसी हैं ? तो मनुष्यमात्र को अभीष्ट-मनोवांछित फल देने वाली हैं ॥२०४॥

इसलिए हमारे आश्रित सभी सत्संगी सावधानी से निरंतर इस शिक्षापत्री के अनुसार ही आचरण करें परन्तु अपनी इच्छानुसार कदापि आचरण न करें ॥२०५॥

और हमारे आश्रित जो पुरुष व स्त्रियाँ इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण करेंगे वे निश्चय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों पुरुषार्थो की सिद्धिको प्राप्त करेंगे ॥२०६॥

जो स्त्री-पुरुष इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण नहीं करेंगे वे हमारे सम्प्रदाय से बाहर हैं, ऐसा हमारे सम्प्रदाय वाले स्त्री-पुरुष समझें ॥२०७॥

और हमारे आश्रित सत्संगी इस शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ करें और जो अनपढ हों वे आदरपूर्वक इस शिक्षापत्री का श्रवण करें ॥२०८॥

इस शिक्षापत्री को पढकर सुनानेवाला कोई न हो तब प्रतिदिन इस शिक्षापत्री की पूजा करें और यह हमारी वाणी, हमारा स्वरुप हैं, ऐसा समझकर इसे परम आदरपूर्वक मानें ॥२०९॥

हमारी इस शिक्षापत्री को दैवी संपत्ति से युक्त मनुष्य को ही देना किन्तु आसुरी संपत्ति से युक्त मनुष्य को कदापि नहीं देना ॥२१०॥

संवत १८८२ अठारह सौ बयासी के माध शुक्ल पञ्चमी के दिन (बसन्त पञ्चमी के दिन हमने यह शिक्षापत्री लिखी हैं जो परम कल्याणकारी हैं ॥२११॥

निजाश्रितानां सकलार्तिहन्ता सधर्मभक्तेंरवनं विधाता ।
दाता सुखानां मनसेप्सितानां तनोतु कृष्णोऽलिखमङ्गलं नः ॥२१२॥

अपने आश्रति भक्तजनों की समग्र पीडाको

नाश करने वाले, धर्म सहित भक्ति की रक्षा करने वाले और अपने भक्तजनों को मनोवांछित सुख को देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण हमारे समग्र मंगलका विस्तार करें ॥२१२॥

इति श्री शिक्षापत्री हिन्दी अनुवाद सहिता समाप्ता ।

गणपतिनी आरती

जय गणपति प्यारा, जय गणपति प्यारा,
विघ्न विनायक मूर्ति, सुखदायक सारा... जय० १
जय जय शंभुकुमार, शोक सदा हरता,
देव विशेष विचक्षण, रक्षणनां कर्ता... जय० २
गौरी पुत्र गणेश, वंदु कर जोडी,
स्मरण करे छे तेनां, दुःख नाखो तोडी... जय० ३
लचपचता लाडुनुं, भोजन बहु भावे,
आप बिराजो छो त्यां, संकट नव आवे... जय० ४
सिद्धि बुद्धि बेउ, शुभ पत्नी संगे,
शुभ कामे विचरो छो, अतिश उछरंगे... जय० ५
सुरनर मुनिवर सर्वे, सेवे छे तमने,
मंगलकारी मूर्ति, आपो सुख अमने... जय० ६
जय संकट हर सुखकर, अरजी उर धरजो,
शरणागत सेवकनो, अभ्युदय करजो... जय० ७

हनुमानजीनी आरती

जय कपि बलवंता, जय कपि बलवंता
सुरनर मुनिजन वंदित, पदरज हनुमंता...जय० १

प्रौढ प्रताप पवन सुत, त्रिभुवन जयकारी,
असुर रिपु मद गंजन, भय संकट हारी...जय० २

भूत पिशाच विकट ग्रह, पीडत नहि जंपे,
हनुमंत हाक सुणीने, थर थर थर कंपे...जय० ३

रघुवीर सहाय ओळंग्यो, सागर अति भारी,
सीता शोध ले आये, कपि लंका जारी...जय० ४

राम चरण रति दायक, शरणागत त्राता,
प्रेमानंद कहे हनुमंत, वांछित फळदाता...जय० ५

आरती

जय सद्गुरु स्वामी प्रभु जय सद्गुरु स्वामी
सहजानंद दयाळु, (२) बळवंतबहुनामी...जय. १
चरणसरोज तमारा वंदु कर जोडी, (२)
चरणे शिस धर्याथी, (२) दुःखनाख्यां तोडी...जय. २
नारायण नरभ्राता द्विजकुळ तनुधारी, (२)
पामर पतित उद्धार्या, (२) अगणित नरनारी...जय. ३
नित्य नित्य नौत्तम लीला, करता अविनाशी (२)
अडसठ तीरथ चरणे, (२) कोटी गया काशी...जय. ४
पुरुषोत्तम प्रगटनुं जे दर्शन करशे (२)
काळ करमथी छूटी, (२) कुटुंब सहित तरशे...जय. ५
आ अवसर करुणानिधि, करुणा बहु कीधी, (२)
मुक्यानंद कहे मुक्ति (२) सुगम करी सीद्धि...जय. ६

धुन

राम कृष्ण गोविंद ! जय जय गोविंद !
हरे राम गोविंद ! जय जय गोविंद !
नारायण हरे ! श्रीमन्नारायण हरे !
श्री मन्नारायण हरे ! श्रीमन्नारायण हरे !
कृष्णदेव हरे ! जय जय कृष्णदेव हरे !
जय जय कृष्णदेव हरे ! जय जय कृष्णदेव हरे !
वासुदेव हरे ! जय जय वासुदेव हरे !
जय जय वासुदेव हरे ! जय जय वासुदेव हरे !
वासुदेव गोविंद, जय जय वासुदेव गोविंद !
जय जय वासुदेव गोविंद ! जय जय वासुदेव गोविंद !
राघे गोविंद ! जय राधे गोविंद !
वृन्दावनचंद ! जय राघे गोविंद !
माधव मुकुंद ! जय माधव मुकुंद !
आनंदकंद ! जय माधव मुकुंद !
नरनारायण ! स्वामिनारायण ! नरनारायण !

श्री राधिकाकृष्णाष्टक

नवीनजीमूतसमानवर्ण रत्नोल्लसत्कुंडलशोभिकर्णम् ।
महाकिरीटाग्रमयूरपर्ण श्रीरादिकाकृष्णमहं नमामि ॥१॥
निधाय पाणि द्वितयेन वेणुं निजाघरे शेखरयातरेणुम् ।
निनानदयन्तं च गतौ करेणुं श्री राधिकाकृष्णमहं नमामि ॥२॥
विशुद्धहेमोजवलपीतवस्त्र हतां रियुथ च विनापि शस्त्रम् ।
व्यर्थीकृताने कसुरद्विऽस्त्र श्रीराधिकाकृष्णमहं नमामि ॥३॥
अधर्मतिष्यार्दित साधु पालं सद्धर्म वैरासुर संधकालम् ।
पुष्पादिमालं व्रजराजबालं श्री राधिकाकृष्णमहं नमामि ॥५॥
वृन्दावने प्रीततया वसन्तं निजाश्रितानापदउद्धस्तनम् ।
गोगोपगोपिरभन्दयन्तं श्रीराधिकाकृष्णमहं नमामि ॥६॥
विश्वद्विषन्मन्मदर्प हारं संसारि जीवाश्रयणीयसारम् ।
सदैव सत्पुरुषसौख्यकारं श्री राधिकाकृष्णमहं नमामि ॥७॥
आनन्दितात्मव्रजवासितोकं नन्दादिसन्दर्शित दिव्यलोकम ।
विनाशित स्वाश्रितजीवशोकं श्रीराधिकाकृष्णमहं नमामि ॥८॥

प्रार्थना

निर्विकल्प उत्तम अति, निश्चय तव घनश्याम,
माहात्म्यज्ञानयुक्त भक्ति तव, एकांतिक सुखधाम ...१

मोहिमें तव भक्तपनो, तामें कोई प्रकार,
दोष न रहे कोई जातको, सुनियो धर्मकुमार ...२

तुमारो तव हरिभक्तो, द्रोह कबु नहि होय,
एकांतिक तव दासको, दीजे समागम मोय ...३

नाथ निरंतर दर्श तव, तव दासनको दास,
एहि मागुं करी विनय हरि, सदा राखियो पास ...४

हे कृपाळु ! हे भक्तपते ! भक्तवत्सल ! सूनो बात,
दयासिंधो ! स्तवन करी, मागुं वस्तु सात ...५

सहजानंद महाराज के, सब सत्संगी सुजान,
ताकुं होय दृढ वर्तनो, शिक्षापत्री प्रमाण ...६

सो पत्रीमें अति बडे, नियम एकादस जोय,
ताकी विकित कहत हुं, सुनियो सब चित्त प्रोय ...७

हिंसा न करनी जंतुकी, परस्त्रिया संगको त्याग,
मांस न खावत मद्यकुं, पिवत नहि बडभाग ...८

विद्यवाकुं स्पर्श नहि, करत न आत्मघात,
चोरी न करनी काहुकी, कलंक न कोईकुं लगात ...९

निंदत नहि कोई देवकुं, बिनखपतो नहि खात,
विमुख जीवके वदनसे, कथा सुनि नहि जात ...१०

एही धर्मके नियममें, बरतो सब हरिदास,
भजो श्री सहजानंद पद, छोडी ओर सब आश ...११

रही एकादश नियममें, करो श्रीहरिपद प्रीत,
प्रेमानंद कहे धाममें, जाओ निःशंक जगजीत ...१२

विश्वेश छो सकळ विश्व तणा विधाता,
दाता तमे सकळ मंगळ शांतिदाता,

माटे तमारुं करुणानिधि सत्य नाम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम.

अज्ञानपाश करुणा करी कापी नाखो,
नित्यं प्रभु तव पदे मम वृत्ति राखो,

भक्तोनुं पालन करो प्रभु सर्व याम,
साष्टांग नाथ तमने करुं हुं प्रणाम.

जे उत्पत्ति तथा स्थिति लय करे वेदो स्तुति उच्चरे,
जेना रोम सुछिन्द्रमां अणुंसमा ब्रह्मांड कोटी फरे,
माया काळ रवि शशी-सुरगणो आज्ञा न लोपे क्षण,
एवा अक्षरधामना अधिपति श्री स्वामिनारायण
आवी अक्षरधामथी अवनीमां जे देहधारी थया,
आप्या सुख अपार भक्तजनने दिले धरीने दया,

कीधा चारु चरित्र गान करवा जेणे करुणा करी,
वंदु मंगळ मूरति उर धरी सर्वोपरी श्रीहरि
जन्मया कौशल देश वेश बटुनो लै तीर्थमांही फर्या,
रामानंद मळ्या स्वधर्म चलव्यो यज्ञादि मोटा कर्या,
मोटां धाम रच्यां रह्यां गढपुरे बे देश गादी करी,
अन्र्धान थया लीला हरितणी संक्षेपमां उच्चरी.

थाळ

जमो थाळ जीवन जाउ वारी,
धोउ कर चरण करो त्यारी. जमो ...१
बेसो मेल्या बाजोठीया ढाळी,
कटोरा कंचननी थाळी,
जळे भर्या चंबु चोखाळी. जमो ...२
करी काठा घउ तणी पोळी,
मेली धृत साकरमां बोळी.
काढ्यो रस केरीनो घोळी, जमो ...३

गळ्या साटा धेबर फूलवडी,
दूधपाक माल पुआ कढी,
पुरी पोची थई छे घीमां चडी. जमो ...४
अथाणां शाक सुंदर भाजी,
लावी छुं तरत करी ताजी,
दहीं भात साकर छे. झाझी. जमो ...५
चळु करो लावुं हुं जळ झारी.
एलची लवींग सोपारी,
पान बीडी बनावी सारी. जमो ...६
मुखवास मनगमता लईने,
प्रसादी थाळ तणी दईने,
भूमानंद कहे राजी थईने, जमो ...७

मुखवास

लेता जाओ रे सावरिया ! बीडी पान न की,
बीडी पाननकी रे, बीडी पानन की
लेता जाओ रे सावरिया
बीडी पाननकी ।।टेका।।

काथो चूनो वळी, लवींग सोपारी,
एलची मंगावुं मुलताननकी लेता...१

एक एक बीडी मोरी, सासु नणंदकी,
दूसरी बीडी मोरे लालनकी लेता...२

आवो हरिकृष्ण हरि पाटे बेसाडु,
बाजी खेलावुं सारी रेनन की लेता...३

प्रेमानंद कहे आपो प्रसादी,
एटली अरज तोरे दासन की लेता...४

चेष्टानां पदो

राग : गरबी पद-१ स्वाभाविक चेष्ठा

प्रथम श्रीहरिने रे, चरणे शिश नमावुं,
नौतम लीला रे, नारायणनी गावुं...१
मोटा मुनिवर रे एकाग्र करी मनने,
जेने काजे रे, सेवे जाई वनने...२
आसन साधी रे, ध्यान धरीने घारे,
जेनी चेष्ठा रे, स्नेह करी संभारे...३
सहज स्वाभाविक रे, प्रकृति पुरुषोत्तमनी,
सुणतां सजनी रे, बीक मटाडे जननी...४
गावुं हेते रे, हरिनां चरित्र संभारी,
पावन करजो रे, प्रभुजी बुद्धि मारी...५
सबज स्वभावे रे, बेठा होय हरि ज्यारे,
तुलसीनी माळा, रे कर लई फेरवे त्यारे...६

रमुज करता रे राजीव नेण रुपाळा,
कोई हरिजननी रे मागी लईने माळा...७
बेवडी राखी रे बबे मणका जोडे,
फेरवे ताणी रे, कंईक माळा तोडे...८
वातो करे रे, रमूज करीने हसतां,
भेळी करी रे, माळा करमां घसतां...९
क्यारेय मींची रे, नेत्र कमळने स्वामी,
प्रेमानंद कहे रे, ध्यान धरे बहुनामी...१०

पद-२

सांभळ सहियर रे, लीला नट नागरनी,
सुणतां सुखडुं रे, आपे सुख सागरनी...१
नेत्र कमळने रे, राखी उघाडा क्यारे,
ध्यान धरीने रे, बेसे जीवन बारे...२
क्यारेक चमकी रे, ध्यान करतां जागे,
जोता जीवन रे, जन्म मरण दुःख भागे...३

पोता आगळ रे, सभा भराई बेसे,
संत हरिजन रे, सामु जोई रहे छे...४
ध्यान धरीने रे, बेठा होय हरि पोते,
संत हरिजन रे, तृप्त न थाय जोते...५
साधु कीर्तन रे, गाय वगाडी वाजा,
तेमने जोईने रे मगन थाय महाराज...६
तेमनी भेळा रे, चपटी वगाडी गाय,
संत हरिजन रे, निरखी राजी थाय...७
क्यारेक साधु रे, गाय वगाडी ताळी,
भेळा गाये रे, ताळी दई वनमाळी...८
आगळ साधु रे, कीर्तन गाय ज्यारे,
पोता आगळ रे, कथा वंचाय त्यारे...९
पोते वार्ता रे, करता होय बहुनामी,
खसता आवे रे, प्रेमानंदना स्वामी...१०

पद-३

मनुष्य लीला रे, करतां मंगलकारी,
भक्त संभामां रे, बेठा भव भयहारी...१
जेने जोतां रे, जाये जय आशक्ति,
ज्ञान वैराग्य रे, धर्म सहित जे भक्ति....२
ते संबंधी रे वार्ता करतां भारी,
हरि समजावे रे, नीज जनने सुखकारी...३
योगने सांख्य रे, पंच रात्र वेदांत,
ए शास्त्रनो रे, रहस्य कहे करी खांत...४
क्यारेक हरिजन रे, देशदेशना आवे,
उत्सव उपर रे, पूजा बहुविध लावे....५
जाणी पोताना रे, सेवक जन अविनाशी,
तेमनी पूजा रे, ग्रहण करे सुखराशी...६
भक्त पोताना रे, तेने श्याम सुजाण,
ध्यान करावी रे, खेंचे नाडी प्राण...७
ध्यानमांथी रे, उठाडे नीजजनने,
देहमां लावे रे, प्राण ईन्द्रीय मनने...८

संत सभामां रे, बेठा होय अविनाश,
कोई हरिजन रे, तेडवो होय पास...९
पहेली आंगळी रे, नेत्रतणी करी सान,
प्रेमानंद कहे रे, साद करे भगवान...१०

पद-४

मोहनजीनी रे, लीला अति सुखकारी,
आनंद आपे रे, सुणतां न्यारी न्यारी...१
क्यारेक वातो रे, करे मुनिवर साथे,
गुच्छ गुलाबना रे, चोळे छे बे हाथे...२
शीतळ जाणी रे, लींबुं हार गुलाबी,
तेने राखे रे, आंखो उपर दाबी...३
क्यारेक पोते रे, राजीपामां होये,
वातो करे रे, कथा वंचाय तोये...४
सांभळे कीर्तन रे, पोते कांईक विचारे,
पूछवा आवे रे, जमवानुं कोई त्यारे...५
हार चडावे रे, पूजा करवा आवे,
तेना उपर रे, बहु खीजी रीसावे...६

कथा सांभळता रे, हरे हरे कही बोले,
मर्म कथानो रे, सुणी मगन थई डोले...७
भान कथामां रे, बीजी क्रिया मांय
क्यारेक अचानक रे, जमतां हरे बोलाय...८
थाय स्मृति रे, पोताने ज्यारे तेनी,
थोडुंक हसे रे, भक्त सामु जोई बेनी...९
एम हरि नित नित रे, आनंद रस वरसावे,
एलीला रस रे, जोई प्रेमानंद गावे...१०

पद-५

सांभळ सजनी रे, दिव्य स्वरुप मुरारी,
करे चरित्र रे, मनुष्य विग्र हारी...१
थया मनोहर रे, मोहन मनुष्य जेवा,
रुप अनुपम रे, निज्जनने सुख देवा...२
क्यारेक ढोलिये रे, बेसे श्री घनश्याम,
क्यारेक बेसे रे, चाकळे पूरण काम...३

क्यारेक गोडदुं रे, ओछाडे सहित,
पाथर्युं होय रे, ते पर बेसे प्रीते...४
क्यारेक ढोलियो रे, उपर तकियो भाळी,
ते पर बेसे रे, श्याम पलांठी वाळी...५
घणुंक बेसे रे, तकिये ओठींगण दईने,
क्यारेक गोठण रे, बांधे खेस लईने...६
क्यारेक राजी रे, थाय अतिसे आली,
संत हरिजनने रे, भेटे बाथमां घाली...७
क्यारेक माथे रे, लई मेले बे हाथ,
छाती माहे रे, चरण कमळ दे नाथ...८
क्यारेक आपे रे, हार तोरा गिरिधारी,
क्यारेक आपे रे, अंगना वस्त्र उतारी...९
क्यारेक आपे रे, प्रसादीना थाळ,
प्रेमानंद कहे रे, भक्त तणा प्रतिपाळ...१०

पद-६

एवां करे रे, चरित्र पावनकारी,
शुकजी सरखा रे, गावे नित्य संभारी...१
क्यारेक जीभने रे, दांत तळे दबावे,
डाबे जमणे रे, पडखे सहज स्वभावे - २
छींक ज्यारे आवे रे, त्यारे रुमाल लईने,
छींक खाये, रे मुख पर आडो दईने - ३
रमूज आणी रे, हसे अति घनश्याम,
मुख पर आडो रे, रुमाल दई सुखधाम - ४
क्यारेक वातो रे, करता थका देव,
छेडे रुमालने रे, वळ देवानी टेव - ५
अति दयाळु रे, स्वभाव छे स्वामीनो,
परदुःख हारी रे, वारी बहुनामीनो - ६
कोईने दुःखीयो रे, देखी न खमाय,
दया आणी रे, अति आकळा थाय - ७

अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दुःख टाळे,
करुणा द्रष्टि रे, देखी वानज वाळे - ८
डाबे खंभे रे, खेस आड छोडे नाखी,
चाले जमणा रे, करमां रुमाल राखी - ९
क्यारेक डाबो रे, कर केड उपर मेली,
चाले वालो रे, प्रेमानंदनो हेली - १०

पद-७

नित नित नौत्तम रे, लीला करे हरिराय,
गातां सुणतां रे, हरिजन राजी थाय - १
सहज स्वभावे रे, उतावळा बहु चाले,
हेत करीने रे, बोलावे बहु व्हाले - २
क्यारेक घोडे रे, चडवुं होय त्यारे,
क्यारेक संतने रे, पीरसवा पधारे - ३

त्यारे डाबे रे, खंभे खेसने आणी,
खेसने बांधे रे, केड संगाथे ताणी - ४
पीरसे लाडु रे, जलेबी, घनश्याम,
जणस जम्यानी रे, लई लईने तेनां नाम - ५
फरे पतंगमां रे, वारंवार महाराज,
संत हरिजनने रे, पीरसवाने काज - ६
श्रद्धा भक्ति रे, अति घणी पीरसतां,
कोईना मुखमां रे, आपे लाडु हसता - ७
पाछली रात्रे रे, चार घडी रहे ज्यारे,
दातण करवा रे, उठे हरि ते वारे - ८
नावा बेसे रे, नाथ पलांठी वाळी,
कर लई कळश्यो रे, जळ ठोळे वनमाळी - ९
कोरे वस्त्र रे, करी शरीरने लुवे,
प्रेमानंद कहे रे, हरिजन सर्वे जुए - १०

पद-८

रुडा शोभे रे, नाही उभा होय,
वस्त्र पहेरेलुं रे, साथळ वच्चे निचोवे - १
पग साथळ ने रे, लुहीने सारंगपाणी,
कोरा खेसने रे, पहेरे सारी पेठे ताणी - २
ओढी उपरणी रे, रेशमी कोरनी व्हाले,
आवे जमवा रे, चाखडी ए चडी चाले - ३
माथे उपरणी रे, ओढी बेसे जमवा,
कान उघाडा रे, राखे मुजने गमवा - ४
जमतां डाबा रे, पगनी पलोंठी वाळी,
ते पर डाबो रे, कर मेले वनमाळी - ५
जमणा पगने रे, राखी उभो श्याम,
ते पर जमणो रे, कर मेले सुखदाम - ६
रुडी रीते रे, जमे देवना देव,
वारे वारे रे, पाणी पीधानी टेव - ७

जसण स्वादु रे, जणाय जमतां जमतां,
पासे हरिजन रे, बेठा होय मनगमता - ८
तेमने आपी रे, पछी पोते जमे,
जमतां जीवन रे, हरिजनने मन गमे - ९
फेरवे जमतां रे, पेट उपर हरि हाथ,
ओडकार खाय रे, प्रेमानंदनो नाथ - १०

पद-९

चळु करे रे, मोहन तृप्त थईने,
दांतने खोतरे रे, सळी रुपानी लईने - १
मुखवास लईने रे ढोलिये बिराजे,
पूजा करे रे, हरिजन हेते झाझे - २
पापण उपर रे, आंटो लई अलबेलो,
फेटो बांधे रे, छोगुं मेली छोलो - ३

वर्षाऋतुने रे, शरदऋतु ने जाणी,
घेला नदीनां रे, निर्मळ नीर वखाणी - ४
संत हरिजनने रे, साथे लईने श्याम,
न्हावा पधारे रे, घेले पूरण काम - ५
बहु जळ क्रिडा रे, करता जळमां न्हाय,
जळमां ताणी रे, दईने कीर्तन गाय - ६
न्हाईने बारा रे, नीसरी वस्त्र पहेरी,
घोडे बेसी रे घेर आवे रंग लहेरी - ७
पावन यशने रे, हरिजन गाता आवे,
जीवन जोईने रे, आनंद उर समावे - ८
गढपुरवासी रे, जोईने जग आधार,
सुफळ करे छे रे, नेणां वारंवार - ९
आवी बिराजे रे, ओसरीए बहुनामी,
ढोलिया उपर रे, प्रेमानंदना स्वामी - १०

पद-१०

निज सेवक ने रे, सुखदेवाने काज,
पोते प्रगट्या रे, पुरुषोत्तम महाराज - १
फळियां मांही रे सभा करी बिराजे,
पुरण शशी रे उडुगणमां जेम छाजे - २
ब्रह्मरस वरसे रे, तृप्त करे हरिजनने,
पोढे रात्रे रे, जमी श्याम शुद्ध अन्नने - ३
बे आंगणीओ रे, तिलक कर्यानी पेरे,
भाल वच्चे रे, उभी राखीने फेरे - ४
सूतां सूतां रे, माळा मागी लईने,
जमणे हाथ रे, नित्त फेरवे चित्त दईने - ५
भूलन पडे रे, केदी एवुं नेम,
धर्मकुंवरनी रे, सहज प्रकृति एम - ६

भर निद्रामां रे, पोढ्य होय मुनिराय,
कोई अजाणे रे, लगार अडी जाय - ७
त्यारे फडकी रे, जागे सुंदर श्याम,
कोण छे ? पूछे रे सेवकने सुखधाम - ८
एवी लीला रे, हरिनी अनंत अपार,
में तो गाई रे, कांईक मति अनुसार - ९
जे कोई प्रीति रे, शीखे सुणे गाशे,
प्रेमानंदनो रे, स्वामी राजी थाशे - १०

राग - घोळ

ओरा आवो श्याम स्नेही सुंदर वर जाउ वाला
जतन करीने जीवन मारा, जीवमांही प्रो व्हाला ...१
चिह्न अनुपम अंगो अंगना, सुरते संभारू वहाला,
नखशिख नीरखी नौतम मारा, उरमां उतारु व्हाला ...२
अरुण कमळ सम जुगलचरणनी, शोभा अति सारी वाला,
चितवन करवा आतुर अति, मनवृत्ति मारी व्हाला ..३

प्रथम ते चिंतनव करु, सुंदर सोळे चिह्न व्हाला,
उध्वरेखा ओपी रही, अतिशे नवीन व्हाला...४
अंगुठा आंगळी वच्चेथी, नीसरीने आवी व्हाला,
पानीनी बे कोरे जोतां, भक्त ने मनभावी व्हाला...५
जुगल चरणमां कहु मनोहर, चिह्न तेनां नाम व्हाला,
शुद्ध मने करी संभारता नाश पामे काम व्हाला ...६
अष्टकोणने उध्वरेखा, स्वस्तिक जांबु जव व्हाला,
वज्र अंकुश केतुं ने पद्म, जमणे पगे नव व्हाला...७
त्रिकोण कलश ने गोपद सुंदर, धनुष ने मीन व्हाला,
अर्ध चन्द्रने व्योम सात छे, डाबे पगे चिह्न व्हाला...८
जमणा पगना अंगुठाना, नखमांही चिह्न व्हाला,
ते तो नीरखे जे कोई भक्त, प्रीतिए प्रवीण व्हाला...९
एज अंगुठानी पासे, तिलक एक नौतण दारु व्हाला,
प्रेमानंद कहे निरखुं प्रीते, प्राण लई वारु व्हाला...१०

(३) राग गरबी पद-१

हवे मारा व्हालाने नहि रे विसारु रे,
श्वास उच्छवासे ते नित्य संभारु रे, १
पड्य मारे सहजानंदजी शुं पानुं रे,
हवे हुं तो केम करी राखीश छानुं रे, २
आव्युं मारे हरिवर वरवानुं टाळुं रे,
ए वर न मळे खरचे नाणुं रे, ३
ए वर भाग्य विना नव भावे रे,
ए स्नेह लग्न विना नव आवे रे, ४
दुरिजन मन रे माने तेम कहेज्यो रे,
स्वामी मारा हृदयानी भींतर रहेज्यो रे, ५
हवे हुं तो पुरण पदवीने पामी रे,
मळ्या मने निष्कुळनंदना स्वामी रे, ६

पद-२

हवे मारा व्हालाना दर्शन सारुं,
हरिजन आवे हजारे हजारु - १
ढोलिये बिराजे सहजानंद स्वामी,
पूरण पुरुषोत्तम अंतर जामी - २
सभा मध्ये बेठा मुनिनां वृंद,
तेमां शोभे तारे वीट्यो जेम चन्द्र - ३
दुरगपुर खेल रच्यो अति भारी,
भेळा रमे साधुने ब्रह्मचारी - ४
ताळी पाडे उपडती अतिसारी,
धून थाय चौद लोक थकी, न्यारी - ५
पाघलडीमां छोगलीयुं अति शोभे,
जोई जोई हरिजननां मन लोभे - ६
पधार्या वहालो सर्वे ते सुखना राशि
सहजानंद स्वामी अक्षरधामना वासी - ७

भांगी मारी जन्मो जन्मनी खामी,
मळ्या मने निष्कुळानंद स्वामी - ८

(४) राग - गरबी पद-१

वंदु सहजानंद रसरुप अनुपम सारने रे लोल,
जेने भजतां छूटे फंद, करे भव पारने रे लोल-...१

समरु प्रगय रुप सुखधाम, अनुपम नाम ने रे लोल,
जेने भव ब्रह्मादि देव, भजे तजी कामने रे लोल-...२

जे हरि अक्षरब्रह्म, आधार पार कोई नव लहे रे लोल,
जेने शेष सहस्त्र मुख गाय, निगम नेतिकहे रे लोल-...३

वर्णवुं सुंदर रुप अनुपम, जुल चरणे नमी रे लोल,
नखशीख प्रेमसखीना नाथ, रहो उरमां रमी रे लोल-...४

पद-२

आवो मारा मोहन मीठडां लाल के,
जोउ तारी मूरति रे लोल,
जतन करी राखुं रसियाराज,
विसारु नहि उरथी रे लोल ...१
मन मारु मोह्युं मोहनलाल,
पाघलडीनी भातमां रे लोल,
आवो ओरा छोगलां खोसुं छेल,
खांतीला जोउं खांतमां रे लोल ...२
व्हाला तारु झळके सुंदर भाल,
तिलक रुडां कर्या रे लोल,
व्हाला तारा वाम करतां तिल,
तेणे मनडां हर्या रे लोल ...३
व्हाला तारी भ्रकुटि ने बाणे श्याम,
काळज मार कोरिया रे लोल,
नेणे तारे प्रेमसखीना नाख के,
चित्त मारां चोरीयां रे लोल ...४

पद-३

व्हाला मुने वश कीधी व्रज राज,
वालप तारा वालमां रे लोल,
मन मारु तलपे जोवा, काज,
टीबकडी छे गालमां रे लोल ...१
व्हाला तारी नासिका नमणी नाथ,
अधरबिंब लाल छे रे लोल,
छेला मारा प्राण करु कुरबान
जोया जेवी चाल छे रे लोल ...२
व्हाला तारा दंत दाडमनां बीज,
चतुराई चावता रे लोल,
व्हाला मारा प्राण हरो छो नाथ,
मीठुं मीठुं गावता रे लोल ...३
व्हाला तारे हसवे हराणु चित,
बीखुं हंवे नव गमे रे लोल,
मन मारु प्रेमसखीना नाथ के,
तम केडे भमे रे लोल ...४

पद-४

रसिया जोई रुपाळीकोट, रुडी रेखावळी रे लोल,
व्हाला मारु मनडुं मळवा च्हाय के जाय चित्तडुं चळी रे लोल-१
व्हाला तारी जमणी भूजाने पास, रुडी तिल चार छे रे लोल,
व्हाला तारा कंठ वच्चे तील एक, अनुपम सार छे रे लोल-२
व्हाला तारा उरमां विनगुण हार, जोई नेणां ठरे रे लोल,
व्हाला ते तो जाणे प्रेमीजन, जोई नित्य ध्यान धरे रे लोल-३
रसिया जोई तमारु रुप, रसिक जन घेलडा रे लोल,
आवो व्हाला प्रेमसखीना नाथ, सुंदर वर छेलडारे लोल-४

पद-५

व्हाला तारी भूजा जुगल जगदीश, जोईने जाउ वारणे रे लोल,
करनां लटकां करता लाल, आवो ने मारे बारणे रे लोल-१
व्हाला तारी आंगळीओनी रेखा, नखमणी जोईने रे लोल,
व्हाला मारा चित्तमां राखुं चोरी, कहुं नहि कोईने रे लोल-२

व्हाला तार उरमां अनुपम छाप, जोवाने जीव आकळो रे लोल,
व्हाला मारा हैडे हरख न माय, जाणुं जे हमणां मळो रे लोल-३
व्हाला तारु उदर अति रसरुप, शीतळ सदा नाथजी रे लोल,
आवो ओरा प्रेमसखीना प्राण, मळु भरी बाथजी रे लोल-४

पद-६

व्हाला तारीमुरति अति रसरुप, रसिक जोईने जीवे रे लोल,
व्हाला ए रसना चाखणहार, छाश ते नवपीवे रे लोल-१
व्हाला मारे सुख संपत तमे श्याम, महोन मन भावता रे लोल,
आवो मारे मंदिर जीवन प्राण, हसीने बोलावता रे लोल-२
व्हाला तारु रुप अनुपम गौर, मूरति मनमां गमे रे लोल,
व्हाला तारु जोबन जोवा काज, के चित्त शरणे नमे रे लोल-३
आवो मारा रसिया सजीव नेण, मरण करीने बोलता रे लोल,
आवो व्हाला प्रेमसखीना सेण, मंदिर मारे डोलता रे लोल-४

पद-७

व्हाला तारुं रुप अनुपम नाथ उदर शोभा घणी रे लोल,
त्रिवणी जोवुं सुंदर छेल, आवोने ओरा अम बणी रे लोल-१
व्हाला तारी नाभि नौतम रुप, उडी अति गोळ छे रे लोल,
कटिलंक जोईने सहजानंद, के मनरंग चोळ छे लोल-२
व्हाला तारी जंघा जुगलनी शोभा, मनमां जोई रहुं रे लोल,
व्हाला नित्य निरखुं पीडीने पानी, कोईने नव कहु रे लोल-३
व्हाला तार चरण कमळनुं ध्यान, धरुं अति हेतमां रे लोल,
आवो व्हाला प्रेमसखीना नाथ, राखुं मारा चित्तमां रे लोल-४

पद-८

व्हाला तारा जुगल चरण रसरुप, वखाणुं व्हालमां रे लोल,
व्हाला अति कोमळ अरुण रसाळ, चोरेचित्त चालमां रे लोल-१
व्हाला तारे जमणे अंगुठे तिल, के नखमां चिह्न छे रे लोल,
व्हाला छेली आंगळीये तिल एक, जोवाने मन दीन छेरे लोल-२

व्हालातारा नखनी अरुणता जोईने, शशीकळा क्षीणछे रे लोल,
व्हाला रसचोरकोरजे भक्त, जोवाने प्रवीण छे रे लोल-३
व्हाला तारी उर्ध्वरेखामां चित्त, रहो करी वासनेरे लोल,
मागे प्रेम सखी कर जोडी, देजो दान दासने रे लोल-४

(५) राग : गरबी

रे श्याम तमे साचुं नाणुं बीजुं सर्वे दुःख दायक जाणुं, रे श्याम तमे,
साचुं नाणुं... टेक
रे तमे विना सुखसंपत कहावे तेतो सर्वे
महादुःख उपजावे, अंते एमां काम कोई नावे, रे श्याम...१
रे मुरख लोक मरे भटकी, जुठा संगे हारे शिरपिटकी,
एथी मारी मन वृत्ति अटकी... रे श्याम...२
छे अखंड अलौकिक सुख सारुं ते जोई जोई मन मोह्युं मारुं,
धरा धन तम उपर वारुं.... रे श्याम....३
रे ब्रह्माथी कीट लगी जोयुं, जुंठुं सुख जाणीने वगोव्युं,
मुक्तानंद मन तम संग मोह्युं.... रे श्याम....४

राग : गरबी - पद-१

आज मारे ओरडे रे, आव्या अविनाशी अलबेल,
बाई में बोलावीआ रे, सुंदर छोगावाळा छेल...आज०१
नीरख्या नेणां भरी रे, नटवर सुंदर श्री घनश्याम,
शोभा शी कहुं रे, नीरखी लाजे कोटीक काम....आज०२
गूंथी गुलाबना रे, कंठे आरोप्या में हार,
लईने वारणां रे, चरणे लागी वारमवार....आज०३
आप्यो में तो आदरे रे, बेसवा चाकळीओ करी प्यार,
पूछ्या प्रीत शुं रे, बाई में सर्वे समाचार...आज०४
कहोने हरि क्यां हता रे, क्यां थकी आव्या धर्मकुमार,
सुंदर शोभता रे, अंगे सजीया छे शणगार....आज०५
पहेरी प्रीतशुं रे, सोरंगी सुंथणली सुखदेण
नाडी हीरनी रे, जोतां तृप्त न थाये नेण...आज०६
उपर ओढीयो रे, गूढो रेटो जोया लाग्य,
सजनी ते समे रे, धन्य धन्य नीरख्या तेनां भाग्य...आज०७

मस्तक उपरे रे, बांध्युं मोळीडुं अमूल्य,
कोटिक रवि शशी रे, ते तो नावे तेने तुल्य...आज०८
रेशमी कोरनो रे, करमां साह्यो छे रुमाल,
प्रेमानंद तो रे, ए छबी नीरखी थयो निहाल...आज०९

पद-२

सजनी सांभळो रे, शोभा वर्णवुं तेनी तेह,
मूर्ति संभारतां रे, मुजने ऊपज्यो अति स्नेह ...सजनी०१
पहेर्या ते समे रे, हरिए अंगे अलंकार,
जेवा में नीरख्या रे, तेवा वर्णवुं करीने प्यार ...सजनी०२
बरास कपूरना रे, पहेर्या हैडे सुंदर हार,
तोरा पाघमां रे, ते पर मधुकर करे गुंजार ...सजनी०३
बाजु बेरखा रे, बाह्ये कपूरना शोभित,
कडां कपूरना रे, जोतां चोरे सहुना चित्त ...सजनी०४
सर्वे अंगमा रे, ऊठे अत्तरनी बहु फोर,
चोरे चित्तनेरे, हसता कमळनयननी कोर ...सजनी०५

हसता हेतमां रे, सौने देता सुख आनंद,
रसरुप मूरति रे, श्रीहरि केवळकरुणाकंद ...सजनी०६
अद्‌भुत उपमा रे, देतां शेष न पामे पार,
धरीने मूरति रे, जाणे आव्यो रस शृंगार ...सजनी०७
व्हालप वेणमां रे, नेणां करुणामां भरपुर,
अंगो अंगमां रे, जाणे उग्या अगणित सुर ...सजनी०८
करता वातडी रे, बोली अमृत सरखां वेण,
प्रेमानंदनां रे, जोतां तृप्त न थाये नेण ...सजनी०९

पद-३

बोल्या श्रीहरि रे, सांभळो नरनारी हरिजन,
मारे एक वार्ता रे, सौने संभाळाव्यानुं छे मन ...बोल्या०१
मारी मूरति रे, मारां लोक भोग ने मुक्त,
सर्वे दिव्य छे रे, त्यां तो जोयानी छे जुक्त ...बोल्या०२
मारुं धाम छे रे, अक्षर अमृत जेनुं नाम,
सर्वे साम्रथी रे, शक्ति गुणे करी अभिराम ...बोल्या०३

अति तेजोमय रे, रवि शशी कोटीक वारणे जाय,
शीतळ शांत छे रे, तेजनी उपमा नव देवाय ...बोल्या०४
तेमां हुं रहुं रे, द्विभुज दिव्य सदा साकार,
दुर्लभ देवने रे, मारो कोई न पामे पार ....बोल्या०५
जीव ईश्वर तणो रे, माया काळ पुरुष प्रधान,
सहुने वश करुं रे, सहुनो प्रेरक हुं भगवान ...बोल्या०६
अगणित विश्वनी रे, उत्पत्ति पालन प्रलय थाय,
मारी मरजी विना रे, कोईथी तरणुं न तोडाय ...बोल्या०७
एम मने जाणजो रे, मारा आश्रित सौ नरनारी,
में तो तम आगळे रे, वार्ता सत्य कही छे मारी ...बोल्या०८
हुं तो तम कारणे रे, आव्यो धामथकी धरी देह,
प्रेमानंदना रे, व्हालो वरस्या अमृत मेह ...बोल्या०९

पद-४

वळी सौ सांभळो रे, मारी वार्ता परम अनुप,
परम सिद्धांत छे रे, सौने हितकारी सुखरुप ...वळी०१

सहु हरिभक्तने रे, जावुं होय मारे धाम,
तो मुने सेवजो रे, तमे शुद्ध भावे थई निष्काम ...वळी०२
सहु हरिभक्तने रे, रहेवुं होये मारे पास,
तो तमे मेलजो रे, मिथ्या पंचविषयनी आशा ...वळी०३
मुज विना जाणजो रे, बीजा मायिक सदु आकार
प्रीति तोडजो रे, जूठां जाणी कुटुंब परिवार ...वळी०४
सौ तमे पाळजो रे, सर्वे दृढ करी मारा नियन,
तम पर रीझशे रे, धर्म ने भक्ति करशे क्षेम ...वळी०५
संत हरिभक्तने रे, कीधो शिक्षानो उपदेश,
लटकां हाथनां रे, करता शोभे नटवर वेश ...वळी०६
निज्जन उपरे रे, अमृत वरस्या आनंदकंद,
जेम सहु औषधी रे, प्रीते पोषे पूरणचंद ...वळी०७
शोभे संतमां रे, जेम कोई उडुगणमां उडुराज,
ईश्वर उदय थया रे, कळिमां करवा जनता काज ...वळी०८
ए पद शीखशे रे, गाशे सांभळशे करी प्यार,
प्रेमानंदना रे, स्वामी लेशे तेनी सार ...वळी०९

संध्या आरती

आरती प्रगट प्रभुजीकी कीजे,
चरणकमण लखी अंतर लीजे ... आरती १

सनकादिक नारद त्रिपुरारि,
विमळ नाम रटे वारंवारी ... आरती २

अनंत कोटी भुवनेश भवानी,
सब विधि महिमा शक्त नदि जानी ... आरती ३

धरत ध्यान दृढ योगी मुनिश्वर,
शेष सहस्त्रमुख रटत निरंतर ... आरती ४

नर-नाटक क्षर अक्षर न्यारा,
पुरुषोत्तम पूरण जन प्यारा ... आरती ५

नौतम रुप अंकळ छबी न्यारी,
ब्रह्मानंद जावत बलिहारी ... आरती ६

(६) राग : बिहाग

पोढे प्रभु सकल मुनिके श्याम, नरनारायण दिव्य मूरति,
स्वामिनारायण दिव्य मूरति, संतनके विश्राम ... पोढे. १
अक्षर पर आनंदधन प्रभु कियो है भूपर ठाम,
जेही मिलत जन तरत माया, लहत अक्षरधाम ... पोढे. २
शारद शेष महेश महामुनि, जपत जेही गुणनाम,
जास पदरज, शिष धरी, होत जन निष्काम ... पोढे. ३
प्रेम के पर्यक पर प्रभु, करत सुख आराम,
मुक्तानंद निज चरणरजढींग, गुन गावत आठो जाम ... पोढे. ४

(७) राग : गरबी

पोढो पोढो सहजानंद स्वामी,
अखियामां निंदरा भराणी रे ... पोढो - १
हां रे तमे माथेथी पाघ उतारो रे,
पछी तमे बनातनी टोपी धारो रे ... पोढो - २

हारे तमे जरकसी जामां उतारोरे,
पछी हीरकोरी धोती धारो रे ... पोढो - ३
हां रे तमो केडनो पटको छोडो रे,
पछी शाल दुशाला ओढो रे ... पोढो - ४
हां रे पोढ्या प्रेमानंदना स्वामी रे,
सखी जोई जोई आनंद पामी रे
पोढो पोढो सहजानंद स्वामी,
अखीयामां निंदरा भराणी रे पोढो रे ... पोढो - ४

एकादशीना पद-१

कोडे कोडे एकादशी कीजीए - रे,
एवुं व्रत जावा नव दीजीए रे कोडे ... १
ए व्रत करे ते धन्य मानवी रे,
ते तो नहायो कोटीकवार जाह्नवी रे कोडे ... २
जेणे वचन प्रमाणे व्रत आदर्युं रे,
तेणे कारज पोतानुं सर्वे कर्युं रे .. कोडे ... ३

एनो महिमा मुनिवर गाय छे रे,
अविनाशी मळ्यानो उपाय छे रे. कोडे ... ४
ब्रह्मानंद कहे एमां हरि रह्या वसी रे,
कीधी उद्धव प्रमाणे एकादशी रे .. कोडे ... ५

पद-२

हरिजन होय ते हरि ने भजे रे,
एकादशी ते कदीनव तजे रे हरि ... १
जाणे मात समान परनार ने रे,
गणे तुच्छ सरिखो संसार ने रे हरि ... २
मद्य मांस हराम जेने नव खपे रे,
जीभे रात दिवस प्रभुने जपे रे हरि ... ३
माया जीव ईश्वरना जाणे मर्मने रे,
रटे ब्रह्म थईने परब्रह्मने रे हरि ... ४
ब्रह्मानंदना व्हालानी छबी उर घरे रे,
मतवालो थईने जगमां फरे रे .. हरि ... ५

पद-३

भले आवी अनुपम एकादशी रे,
मारे वाले सामुं जोयुं हसी रे भले - १
आज वाघी आनंद केरी वेलडी रे,
थई रसिया संगाथें रंगे रेलडी रे भले - २
लटकाळा कुंवर धर्मलालनी रे,
चित्तडामां खूंतीछेछबी चालनी रे भले - ३
रंगभीनो रमे राम रंगमां रे,
अति आनंदि थयो छे मारा अंगमां रे भले - ४
प्रिती जाणी रसिलो वटने पळया रे,
ब्रह्मानंदो व्हालो मुजने मळया रे भले - ५

पद-४

धन्य धन्य एकादशी आजनी रे,
रुडी निरखी छबीव्रजराजनी रे, धन्य...१

फूलडानां छोगां ते चित्तमां धर्या रे,
ते जोईने मारा नेणां ठर्या रे, धन्य...२
भाळी केसर तिलक रुडुं भालमां रे,
मारी लगनी लागी छे धर्मलालमां रे, धन्य...३
वांकी भूकुटीमां मन मारुं भमे रे,
हवे बीजुं दीठुं ते मने नव गमे रे, धन्य...४
ब्रह्मानंद कहे रुपाळी एनी आंखडी रे,
प्यारी लाल कमळ केरी पांखडी रे, धन्य...५

पद

जेने जोईए ते आवो मोक्ष मागवा रे लोल,
आजे धर्मवंशीने द्वार नरनारी ...जेने० टेक
आवो प्रगट प्रभुने पगे लागवा रे लोल,
वालो तुरत उतारे भवपार नरनारी ...जेने० १
जन्म मृत्युना भय थकी छूटवा रे लोल,
शरणे आवो मुमुक्षु जन नरनारी ...जेने० २

शीद जाओ छो बीजे शिर कूंटवा रे लोल,
यां तो तुरत थाओ पावन नरनारी ...जेने० ३
भूंडो शीदने भटको छो मत पंथमां रे लोल,
आवो सत्संग मेलीने मोक्षरुप नरनारी ...जेने० ४
आणो प्रेम प्रतीति साचा संतमां रे लोल,
थाशे मोक्ष अतिशे अनुप नरनारी ...जेने० ५
जुओ आंख्य उघाडी विवेकनी रे लोल,
शीद करो गोळ खोळ एक पाड नरनारी ...जेने० ६
लीधी लाज बीजा गुरु भेखनी रे लोल,
काम रोंध वगाडी छे राड्य नरनारी ...जेने० ७
एवा अज्ञानी गुरुना विश्वासखी रे लोल,
जाशो नरके वगाडतां ढोल नरनारी ...जेने० ८
वालो तुरत छोडावे काळपाशथी रे लोल,
प्रेमानंद कहे आपे छे हरिकोल नरनारी ...जेने० ९

राग : गरबी - पद - १

ओच्छवनी प्यारी केशवनी, आज एकादशी ओच्छवनी,
कोटीक गौ केरां दान के पण, नावे तोले एना लवनी. आज०१
मंगळरुप सदा सुखकारी, व्लाही निधि जन वैष्णवनी. आज०२
वचन प्रमाणे करे व्रत जेनुं, त्रास मटे रे मृत्युं भवनी. आज०३
ब्रह्मानंद कहे व्रत करवुं, एम आज्ञा स्वामी उद्धवनी. आज०४

पद

धर्मकुंवर श्रीकृष्णजी, तमे भक्तपति भगवान,...ए वर मागुं छुं० टेक.
दयानिधि तमे दासने, नित्य आपो छो दान...ए वर मागुं छुं० १
निर्विकल्प उत्तम अति, एवो निश्चे थाय तमारो,...ए वर मागुं छुं०
अलबेला तम आगळे, हुं अरज करुं ए सारु...ए वर मागुं छुं०
महात्मज्ञाने सहित हरि, एवी एकांतिकी भक्ति,...ए वर मागुं छुं०
प्रीत रहे तव चरणां, बीजे रहे सदा वैरक्ति,...ए वर मागुं छुं०
हुंमां तमारुं भक्तपणुं, हरि एमां कोई प्रकार...ए वर मागुं छुं०
दोष न रहे कोई जातनो, ए आपो धर्मकुमार...ए वर मागुं छुं०
तमारा कोई भक्तनो, मोर ट्रोह क्यारे नव थाय,...ए वर मागुं छुं०
संग एकांतिक भक्तनो, मने नित्य आपो मुनिराय...ए वर मागुं छुं०

दास तमारा दासनो, मने राखो नाथ हजूर...ए वर मागुं छुं०
प्रेमानंदनी विनति, सांभळजो श्याम जरुर...ए वर मागुं छुं०

प्रेमानंद स्वामीना कीर्तनो

राग : गरबी - पद - १

हुं तो जईश गिरधर जोवा रे, मा मुने वारीश मां,
मारा उरमां छबीलाजीने प्रोवा रे, मेणले मारीश मां..मा मुने० टेक
जाईश जोवारे हुं तो नंदजीनो लालो,
हा रे मुने परम स्नेही लागे व्हालो रे...मा मने० १
छेल छबीलो व्हालो कुंजनो विहारी,
हा रे तो जीवनदोरी छे मारी रे....मा मुने० २
वारीश मारे तुने कहुं छुं रे वहेलुं,
हा रे हुं तो माथुं जातां नव मेलुं रे....मा मुने० ३
प्रेमानंदना स्वामीने सारु,
हा रे कुरबान कर्युं छे जीवतर मारुं रे....मा मुने० ४

राग : खमाय - पद -१

रुडा लागो छो राजेन्द्र मंदिर मारे आवता रे रुडा० टेक०
जरकसीयो जामो हरि पहेरी, माथे बांधी पाघ सोनेरी

गूढो रेंटो ओढी मन ललचावतारे रुडा० टेक१
हैडे हार गुलाबी फोरे, चित्त मारुं रोकी राख्युं तो रे,
गजरा काजु बाजु मन मारे भावता रे रुडा० टेक२
कनक छडी सुंदरकर लईने, गजगति चालो हळवा रहीने,
चितडुं चोरो छो मीठुं मीठुं गावता रे रुडा० टेक३
प्रेमानंदना नाथ विहारी, जाउं तारा वदनकमळ पर वारी,
हेते शुं बोलावी ताप समावतारे रुडा० टेक४

रग : परज - पद - १

सोनेरी मोळीयुं सुंदर सोनेरी मोळीयुं, (२) धर्मकुवरनुं,
मोतीडे मोळीयुं सुंदर मोतीडे मोळीयुं, (२) रसिक सुंदरनु ...१
भाल विशाळमां सुंदर भाल विशाळ मां, (२) तिलक केसरनुं,
भ्रूकुटी सुंदर जाणीए भ्रूकुटी सुंदर रे (२) घर मधुकरनुं ...२
करणे कुंडलियां काजु करणे कुंडलिया, (२) जडियल मोतीए,
गोळ कपोळमां रुडा गोळ कपोळमां, (२) झळझळ ज्योतीअ ...३
नेणां रंगीलां लाल नेणां रंगीला रे, (२) कमळनी पांखडी,
प्रेमानंद नीरखी छबी प्रेमानंद नीरखी, (२) ठरी छे आंखडी ...४

पद-२

नासिका नमणी हरिनी नालिका नमणी, (२) पोपट सरीखडी,
नीरखी वदनचंद्र नीरखी वदन रे, (२) किरण्युं झांखी पडी ...१
कंठ ज नीरखी हरिनो कंठ ज नीरखी, (२) वाधी छे प्रीतडी,
छाती ऊपडती मांही छाती ऊपडती रे, (२) मोती माळा बेवडी ...२
सुंदर उदर हरिना सुंदर उदरमांही, (२) पडे छे त्रिवळी,
नाभि गंभीर गोळ नाभि गंभीर जोई, (२) मनडुं गयुं गळ ...३
कटिलंक नीरखी हरिनो कटिलंक नीरखी, (२) मोह पाम्यो केसरी,
प्रेमानंद नीरखी छबी प्रेमानंद नीरखी (२) नटवर वेषरी ...४

पद-३

लटकंता आवो लाल लटकंता आवो रे, (२) मारे मंदिरे मोरारी,
गजगति चाल रुडी गजगति चाल रे, (२) जोई बलिहारी ...१
साथळ घुंटण सुंदर साथळ घुंटण रे, (२) जोई पिंडीने पानीयुं,
घुंटी पेनीनी छबी गुंटी पेनीने रे, (२) मारे मन मानीयुं ...२
अरुणतळामां सुंदर अरुणतळामांही (२) सोळे चिह्न शोभतां,
ऊर्ध्वरेखामां रुडी ऊर्ध्वरेखामां रे, (२) मुनिमन लोभतां ...३
मूर्ति महाराजनी श्रीमूर्ति महाराजनी, (२) गाई प्रीते करी,
प्रेमानंद कहे नाथ प्रेमानद कहे रे, (२) अंतरमां रहो हरि ...४

पद-४

फूलडे गरकाव फुल्या फुलडे गरकाव रे, (२) आवो डोलरीया,
अत्तरनी फोरमां प्यारा अत्तरनी फोरमांही (२) भीना रंग भरीया ...१
हार हजारी उर हार हजारी रे, (२) गुच्छ बेउ कानमां,
बाजु काजु छे बांये बाजु काजु छे रे, (२) नीरखुं नित्य ध्यानमां ...२
गजरा गुलाबी करमां गजरा गुलाबी रे, (२) खुंत्या मारा चित्तमां,
जीवन जाणो छो बहु जीवन जाणो छो रे, (२) पातळीया प्रीतमां ...३
मोही छुं माणीगर हुं तो मोही छुं माणीगर रे, (२) मुखने मरकलडे,
गमीया छो गिरधर, गमीया छो गिरधर (२) प्रेमानंदने दलडे ...४

राग : महाङ

पधारोने सहजानंदजी हो, गुना करीने माफ...टेक
प्रणाम छे धर्मतातने, भक्तिमातने प्रणाम
प्रणाम छे जेष्ठ भ्रातने, ईच्छारामने प्रणाम हो...गुना० १
पति मेल्या पियुतम कारणे, मेली कुळ मरजाद,
मातपिता मूक्या छे स्वामी, एक तमारे काज हो...गुना० २

गुरुड तजीने पाळा पधार्या, गजसारु महाराज,
ए रीते तमे आवो दयाळु, करवा अमारा काज हो... गुना० ३
अम जेवा तमने घणा, पण तमो अमारे एक,
प्रेमसखी विनती करे छे, जो राखो हमारी टेक हो.... गुना० ४

पद-४

मूर्ति मारे मन मानी, मोहन तारी मूर्ति मारे मन मानी,
राखुं नेणामां छानी, मोहन मूर्ति मारे मन मानी... मोहन- टेक.
छानी राखुं कोईने नव दाखुं रे, रसिया छेल गुमानी.... मोहन० १
नटनागर हरि रुप उजागर रे, सुंदरवर सुखखानी...मोहन० २
मुख मंदहास अधरबिंब राता रे, रेखा ऊठे छे नानी नानी...मोहन० ३
प्रेमसखी ए शोबा नीरखी रे, रात दिवस दीवानी...मोहन० ४

ब्रह्मानंद स्वामीना कीर्तनो

(प्रभातियां)

राग : भैरव पद - १

अधम उद्धारण अविनाशी तारा बिरुदनी बलिहारी रे,
ग्रही बांह्या छोडो नहि गिरिधर अविचळ टेक तमारी रे ...अधम०

भरी सभामां भूधरजी तमे थया छो माडी मारी रे,
बेटाने हेते बोलावो अवगुणिया विसारी रे ...अधम०

जेवो तेवो पुत्र तमारो अणसमजुं अहंकारी रे,
पेट पड्यो ते अवश्य पाळवो वलम जुओ विचारी रे ...अधम०

अनळ अहि जो ग्रहे अजाणे ते छोडावे रोवारी रे,
बाळकने जननी सम बीजुं नहि जगमां हितकारी रे ...अधम०

ब्रह्मानंदनी एज विनति मन धारीए मुरारी रे,
प्रीत सहित दर्श परसादी जोये सांज सवारी रे ...अधम०

राग : भैरवी - पद - १

प्रातः थयुं मननोहन प्यारा, प्रीतम रह्या शुं पोढीने,
वारंवार करुं छुं विनति, जगजीवन कर जोडीने प्रात० १
घरघरथी गोवाळा आव्या, दर्शन कारण दोडीने,
आंगणिये ऊभी व्रज - अबळा, मही वलोवा छोडीने प्रात० २
बहुरुपी दरवाजे बेठा, शंकरने नेजा खोडीने,
मुखडुं जोवा आतुर मनमां, जोरे राख्या ओडीने, प्रात० ३
भैरव राग गुणीजन गावे, तान मनोहर तोडीने,
ब्रह्मानंदना नाथ विहारी, ऊठ्या आळस मोडीने प्रात० ४

राग : गरबी - पद - १

मन लीधुं मोरलडीना तानमां रे,
हुं तो मोही छुं छेलाजीना वानमां रे...मन० टेक.
सखी आज गई ती हुं तो पाणीए रे
वहाले मुजने बोलावी मीठी वाणीए रे ... मन० १
वहाले ऊभां ता गोवालीडाना साथमां रे,
लीधी बंसी मनोहर हाथमां रे...मन० २

रुडो छोगां मेल्यां रळियामणां रे,
भाळी लीधा भुदरजीना भामणा रे...मन० ३
मारी लगनी लागी छे नंदलालमां रे,
ब्रह्मानंदने वहाले जोयुं वहालमां रे...मन० ४

राग : गरबी पद-१

वहाला लागो छो विश्वाधार रे, सगपण तम साथे,
में तो सर्व मेल्यो संसार रे, सगपण तम साथे...१
मारा मनमां वस्या छो आवी श्याम रे स० तम सारु तज्युं धन धाम रे...२
मारुं मनडुं लोभाणुं तम पास रे, स० मुने नथी बीजानी आशरे...३
मारे माथे धणी छो तमे एक रे, स० मारी अखंड निभावजो टेक रे...४
मेंतो देह धर्यो छे तमकाज रे. स० तमने जोई मोही छुं व्रजराज रे...५
हुंतो हेते वेचाणी तमहाथ रे. स० छो ब्रह्मानंदना नाथ रे...६

राग : गरबी - पद - १

व्हाल मारी शुद्ध बुद्ध तें हरी लीधी रे, ताटे लटके वेरागण कीधी...टेक०
तारी नवल कलगी दीठी रे, मनडामां लागे अति मीठी रे,
जाणे जबर जुदुडानी चीठी...व्हाला० १

जोयुं मोळीडुं आटे फरतुं रे, पल एक नथी वीसरतुं रे,
मारुं हैडुं धीरज नथी धरतुं...व्हाला० २
भाले आड केशर केरी भारी रे, रेखुं त्रण उपडती रुपाळी रे,
जाणे मन पकड्यनी छे जाणी...व्हाला० ३
बंकी भ्रुकुटी घणी मन भावी रे, ब्रह्मानंदने वसी उपर आवी रे,
जाणे श्याम कबाण चडावी...व्हाला० ४

राग : गरबी - पद - १

तारे चटक रंगीलो छेडलो, अलबेला रे,
कांई नवल कसुंबी पाघ, रंगना रेला रे.
शिर अजब कलगी शोभती, अ० हैडामां राख्या लाग...रं० १
मोळीडुं छायुं मोतीडे, अ० फूलडांनी सुंदर फोर... रं० २
घेरे रंगे गुच्छ गुलाबना, अ० जोई भ्रमर भमे ते ठोर...रं० ३
तारी पाघडलीना पेचमां, अ० मारुं चित्तडुं थयुं चकचूर...रं.० ४
ब्रह्मानंद कहे तारी मूरति, अ० वणदीठे घेली तूर...रं० ५

मुक्तानंद स्वामीना कीर्तनो

(प्रभातियां)

राग : केदारो प्रभाती - पद - १

ध्यान धर ध्यान धर धर्मना पुत्रनुं, जे थकी सर्व संताप नासे,
कोटि रवि चंद्रनी कांति झांखी करे, एवा तारा उर विषे नाथ भासे...ध्यान०१
शिर पर पुष्पनो मुगट सोहामणो, श्रवण पर पुष्पना गुच्छ शोभे
पुष्पना हारनी पंक्ति शोभे गळे, नीरखतां भक्तनां मन लोभे...ध्यान०२
पचरंगी पुष्पना कंकण कर विषे, बांये बाजुबंध पुष्प केरा,
चरणमां श्यामने नेपुर पुष्पना, ललित त्रिभंगी शोभे घणेरा...ध्यान०३
अंगोअंग पुष्पनां आभरण पहेरीने, दास पर महेरनी दृष्टि करतां
कहे छे मुक्तानंद भज दृढ भावशुं, सुख तणा सिंधु सर्वे कष्ट हरता...ध्यान०४

राग : भरवी-प्रभाती - पद-१

स्वामिनारायणनुं स्मरण करतां, अगम वात ओळखाणी रे,
निगम निरंतर नेति कही गावे, प्रगटने प्रणामी रे टेक०
मंगळरुप प्रगटने मेली, परोक्षने भजे जे प्राणी रे,
तप तीर्थ करे देव देरां, मन न टळे मसाणी रे.... स्वामि०

कथाने कीर्तन कहेता फरे छे, कर्मतणी जेम कहाणी रे,
श्रोताने वक्ताबेउ समज्या विनाना, पेटने अर्थे पुराणी रे....स्वामि
काशी केदार के द्वारका दोडे, जोगनी जुक्ति न जाणी रे,
फेरा फरीने पाछो घरनो घरमां, गोधो जोडाणो जेम घाणी रे...स्वामि
पीधा विना प्यास न भांगे, मर पंड उपर ढोळे रे पाणी रे,
मुक्तानंद मोहन संग मळतां, मोज अमूलख माणी रे...स्वामि

राग : गरबी - पद-१

मोहनने गमवाने ईच्छो माननी,
त्यागो सर्वे जूठी मननी टेकजो,
पतिव्रतानो धर्म अचळ करी पाळजो,
हरिचरणे रहेजो अबला थई छेक जो
वळी एक वात कहुं छुं अधिक विवेकनी,
सांभळ बेनी तारा सुखने काज जो,
हरिजन संगे राखो पूरण प्रीतडी,
त्यागो मद मत्सर जूठी कुळ्लाज जो

सुखदायक तुं जाणे सुंदरश्यामने
अति दुःखदायक मन पोतानुं जाणजो,
मुक्तानंदनो नाथ मगन थई सेवजो,
समजी विचारी बोलो अमृतवेण जो

राग : गरबी - पद - १

जन्म सुधार्यो रे मारो, मळीया नटवर नंददुलारो...टेक०
करुणा अतीशे रे कीधी, भवजळ बुडतां बांह्य ग्रही लीधी...१
मुज पर अढळक रे ढळीया, करुणा करी घेरबेठां मळीया...२
मन दढ करीयुं रे मोरारी, हवे हुं थई रही जगथी न्यारी...३
आनंद उरमां रे भारी, शिर पर गाजे गिरिवरधारी...४
नीरभेनी नोबत रे वागी, कहे मुक्तानंद भ्रमणा भागी...५

राग : काफी गरबी - पद - १

हरि हैयाना हार छोजी रे, तमे हरि हैयाना हार छो,
सेज तणा शणगार छो...जीरे०२
मुखथी शुं घणुं कहीए मोहन रे, प्राणतणा आधार छो...जीरे० १

वालपणामां अतीशे व्हाला रे, नटवर नंदकुमार छो जीरे० २
दुरीजनीयान दूर घणा छो रे, प्रेमी ते जनता प्राण छो...जीरे० ३
मुक्तानंद कहे नट नाटक धरी रे, शरणागतना सार छो...जीरे० ४

गरबी - पद - १

व्हाला रुमझूम करता कहान, मारे घेर आवो रे,
मारा पूरा करवा कोड, हसीनो बोलावो रे ...१
मारे तम संग लागी प्रीत, श्याम सोहागी रे,
में तो तम संग रमवा काज, लज्जा त्यागी रे ...२
व्हाला अबळा उपर महेर, करजो मोरारी रे,
हुं तो जन्मोजन्मनी नाथ, दासी तमारी रे ...३
मारा प्राणतणा आधार, प्रीतम प्यारा रे,
पळ रहो मा नटवर नाव, मुजथी न्यारा रे ...४
आवो छोगां मेलीने श्याम, धडक म धारो रे,
में तो फूलडे समारी सेज. शयाम सुधारो रे ...५

व्हाला नयणातणुं फळनाथ, मुजने आपो रे
मुक्तानंद कहे महाराज, दुखडां कापो रे ...६

पद - २

हुं तो छुं घणी नगणी नार, तोय तमारी रे,
तमे गुणसागर गोपाळ, देव मोरारी रे ...१
मुने करी पोतानी कहान, दोष न जोया रे,
तमे गुणग्राहक गोपाळ, मुज पर मोह्या रे ...२
तमे श्याम सुंदर सुखरुप, कुंजविहारी रे,
मारे मंदिर आवो माव, तम पर वारी रे ...३
मुने करी कृतारथ कहान, श्याम सोहागी रे,
मारे भवनी भावट आज, सर्वे भागी रे ...४
मारे अमृत वर्ष्या मेह, थई अनुरागी रे,
मारी तम संग त्रिभोवनराय, लगनी लागी रे ...५
मारा पुण्यतणो नहि पार, तम संग मळतां रे,
मुक्तानंद कहे महाराज, अंतर टळतां रे ...६

पद-३

मारुं मनगमतुं करी मांव, सुखडुं दीधुं रे,
मारुं मंदिरयुं महराज, वैकुंठ कीधुं रे ...१

हवे रहो रसिया दिनरात, करी मन हेठुं रे
मुने मळी चिंतामणी श्याम, दुःख नहि वेठुं रे ...२

मुने सर्वे सैयरमां श्याम, कीधी समोती रे,
मारा हैडा केरी हाम, सर्वे पोती रे ...३

व्हाला मुज नगणी पर नाथ, अढळक ढलीया रे,
तमे एकांते अलबेल, आवीने मळीया रे ...४

मुने मुकथी दीधो तंबोल, हीसने बोलावी रे,
मारामननी ईच्छा आज, सघळी फावी रे ...५

तमे रसियाजी रसरीत, शुं सुख आप्युं रे,
मुक्तानंद कहे महाराज, दुःखडुं काप्युं रे ...६

पद-४

मारा मंदिरीयामां माव, मोजुं माणो रे,
मने शुं करशे संसार, धडकम आणो रे ...१

हुं तो तरणातुल्य संसार, सघळो जाणुं रे,
व्हाला एक तमारी बीक, उरमां आणुं रे ...२

तमे भूपतणा छो भूप, महा सुखकारी रे,
व्हाला तन मन धन परिवार, तम पर वारी रे ...३

तोय अधर अमृतथी नाथ, हुं धराउ रे,
व्हाला नित्य नौतम शणगार, सजी सुख आप्युं रे ...४

तमे रसिया रंगनी रेल, व्हालम वाळी रे,
हुं तो मगन थई मस्तान, मुखडुं भाली रे ...५

मुने आप्यो अखंड सुहाग, कुंज विहारी रे,
मुक्तानंद कहे महाराज, जाउं बलिहारी रे ...६

राग : सामेरी – पद – १

हरि भजतां सहु मोटप पामे, जन्ममरण दुःख जाये रे,
पारस परसी लोह कंचन थई, मोघें मूले वेचाय रे ...हरि० १

मुनि नारदनी जात ना जानुं, दासीपुत्र जग जाणे रे,
हरिने भजी हरिनुं मन केवाणां, वेद पुराण वखाणे रे ...हरि० २

राधाजी अति प्रेम मगन थई, उर धार्या गिरधारी रे,
हरिवर वरी हरि तुल्य थया, जेनुं भजन करे नरनारी रे ...हरि० ३

श्यामळीयाने शरणे जे आवे, तेना ते भवदुःख वामे रे,
मुक्तानंदना नाथने मळतां, अखंड ए वातण पामे रे ...हरि० ४

राग : गरबी

स्नेहभर्या नयने निहाळतां हो वंदन आनंद घनश्यामने.
अमिमय दृष्टिए निहळतां हो वंदन आनंद घनश्यामने
छपैयापुरमां वालो आपे प्रगट थया.
धर्म भक्तिने घेर आनंद उत्सव थया.
संतोने आनंद उपजावता हो...वंदन० १

बाळचरित्र करी आपे वन विचर्या,
तीर्थमांही फरी जीवो पावन कर्या,
नीलकंठ नाम धरावता हो...वंदन० २

वलकल वस्त्र धरी पुलहाश्रमे रह्या,
ब्रह्मरुप तेज करी मोटा जोगी थया,
निज स्वरुप समजावता हो...वंदन० ३

लोजपुर धाम रही सरजुदास कावीया,
सर्वोपरी ज्ञान कही संतोने रिझावीया,
मुक्तानंद प्रेम थकी पूजता हो...वंदन० ४

काफी - पद-१

सहजानंद हरि, प्रगट थया सहजानंद हरि... टेक०
व्याससमुनिए जे पूर्वे कही ती, ते वात साची करी... प्रगट० १
कौशल देशमां प्रगट्या पोते, द्विजकुळ देह धरी... प्रगट० २
अधर्म केरां मूळ उखाडी, सद्धर्म स्थाप्यो फरी... प्रगट० ३
निष्कुळानंद कहे दुर्गपुर आव्या, नीरख्यां में नेणां भरी... प्रगट०४

शरण पद

श्रीजी महाराज मांगु, शरण तमारुं,
शरण तमारुं मागुं, शरण तमारुं ...श्रीजी०

अखंड छतां मुरारी आप, थया अवतारी,
मनुष्य लीला बतावी गुण शा उच्चारुं ...श्रीजी०

प्रगट प्रभु पिछान्या, धन्य भाग्य मारां,
मळ्या सहजानंद स्वामी, अधम उदार्या ...श्रीजी०

रामरुपे रावण मार्यो, कृष्णरुपे कंस संहार्यो,
नारायणनुं नाम ज लेतां, अजामेळ तार्यो ...श्रीजी०

गढडुं गोकुळसम कीधुं, घेला नीर प्रेमे पीधुं,
दादा खाचरने दीधुं, मोक्षपद प्यारुं ...श्रीजी०

भगवतसूत कहे छे प्रीते, प्रभु भजो रुडी रीते,
भवजळ तरवानुं, नाव छे आ सारुं ...श्रीजी०

भक्तकवि नरसिंहना कीर्तनो

(प्रभातियां)

राग : प्रभात

जागने जादवा कृष्ण गोवाळीया, तुज विना धेनुमां कोण जाशे ?
त्रणसेंने साठ गोवाळ टोळे मळ्या, वडोरे गोवाळीया कोण थाशे ?
जागने० १

दहीं तथां दैथरां घी तणां घेबरां, कढीयल दूध ते कोण पीशे ?
हरि तार्यो हाथीयो, काळीनाग नाथीयो, भूमीनो भार ते कोण हरशे ?
जागने० २

जमुनाने तीरे, गौधण चरावतां, मधुरीशी मोरली कोण वाशे ?
भणे नरसैंयो, तारा गुण गाई रीझीये, बुंडतां बावडी कोण स्हाशे ?
जागने० ३

जळकमळ छांडी जाने....

जळकमळ छांडी जाने बाळक, स्वामी अमारो जागशे,
जागशे तने मारशे, मने बाळहत्या लागशे...जळ० टेक०

कहे रे बाळक तुं मारग भूलियो, के तारा वेरीए वळावीयो,
निश्चे तारो काळज खूट्य, अहींया ते शीद आवीयो... जळ० १
नथी नागण हुं मारग भूलियो, नथी मारा वेरीए वळावीयो,
मथुरानगरीमां जूगटुं रमतां, नागनुं शीश हुं हारीयो... जळ० २
रंगे रुडो रुपे पुरो, दीसंतो कोडीलो कोडामणो,
तारी माताए केटला जन्म्या, तेमां तुं अळखामणो... जळ० ३
मारी माताए बेउ जन्म्या, तेमां हुं नटवर न्हानडो,
जगाड तारा नागने, मारुं नाम कृष्ण कहानडो... जळ० ४
लाख सवानो मारो हार आप्युं, आपुं रे तुजने दोरीयो,
एटलुं मारा नागथी छानुं, आपुं तुजने करी चोरीयो... जळ० ५
शुं करुं नागण हार तारो, शुं करुं तारो दोरीयो,
शाने काजे नागण तारे, करवी घरमां चोरीयो... जळ० ६
चरण चांपी मूछ मरडी, नागणे नाग जगाडीयो,
उठोने बळवंत कोई, बारणे बाळक आवीयो... जळ० ७
बेउ बळिया बाथे वळीया, कृष्णे काळिनाग नाथीयो,
सहस्त्रफेण फूंफवे जेम, गगन गाजे हाथीयो... जळ० ८

नागण सौ विलाप करे छे, नागने बहु दुःख आपशे,
मथुरानगरीमां लई जशे, पछी नागनु शीश कापशे... जळ० ९
बे कर जोडीने विनवे स्वामी, मुको अमारा कंथने,
अमे अपराधी कांई न समज्यां, न ओळख्या भगवंतने... जळ० १०
थाळ भर्यो शग मोतीये, श्रीकृष्णने रे वधावियो,
नरसैयाना नाथ पासेथी, नागणे नाग छोडावियो... जळ० ११

माधवदासनुं किर्तन

पूछी जो अंतरने मारा

पूछी जो अंतरने तारा हैये मूकी हाथ,
कहोने क्यांथी रीझे घनश्याम...टेक०
पुन्य गयुं परवारी आजे, वधी रह्युं छे पाप...कहोने० १
स्वारथना सहु सगां संबंघी, स्वार्थनी छे दुनिया अंधी,
वहाला वेरी थातां जगतमां, सरी जतुं ज्यां स्वार्थ...कहोने० २
कामिनी ने कंचन काजे, भाई भाईनां गळांज कापे,
शरम न आवे सहेजे रे तुजने. करतां काळां काम...कहोने० ३

जुठुं बोलतां न अवचकातां, मानव दिन दिन दावन थातां,
पापी पेटने खातर आजे, कतल थकी गौमाता...कहोने० ४
सत्य अहिंसा दया भुलाई, लाभने लोभे वधी बुराई,
दुःखमां नाखे दीकरीने, पछी लेर करे माबाप...कहोने० ५
गयो जमानो राम सीतानो, पतिव्रतानो पवित्रतानो,
आज कालना जुवानीयाए, नेवे मूकी लाज...कहोने० ६
धर्म नियमने छेटे मूक्या, ईश्वरने पण छेकज चुक्या,
दारु पीधेलां मांकडा जेवा, जीव बन्या बेफाम...कहोने० ७
पापनां पोटलां बांध्धा प्राणी, लोकमांही शी करी कमाणी,
माधवदास कहे मूरख, मूळगो खोयो माल...कहोने० ८

जेराम भक्तनां किर्तनो

राग : गरबी - पद १

आज सखी आनंदनी हेली, हरिमुख जोईने हुं थई छुं रे घेली...१
महारे मुनिना ध्यानमां नावे, तेरे शामळीयोजी मुजने बोलावे...२

जे सुखने भवब्रह्मा ईच्छे, तेरे शामळीयोजी मुजनेरे प्रीछे...३
न गई गंगा गोदावरी काशी, घेर बेठा मळ्या अक्षरवासी...४
तपरे तीर्थमां हुं काई नव जाणुं, स्हेजे स्हेजे हुं तो सुखडारे माणुं...५
जेराम कहे स्वामि स्हेजे मळीया, वातनी वातोमां व्हालो अढळक ढळीया...६

पद-२

महेर करी मारे मंदिर आव्या, थाळ भरी में मोतीडे वधाव्या...१
आनंद अंग न माय मारी बेनी, हरिवर भेटतां लज्जा रे शेनी...२
दुरीजन मन रे माने तेम कहेजो, स्वामीजी मारी ह्यदिया रहेजो...३
जेरे जोईए ते मागजो मावा, त्रिकम तमने हुं नहि दउं जावा...४
मुखथी ते झाझुं शुं कही दाखुं, हरिवर मारा ह्यदियामां राखुं...५
कोण रे पुण्ये विठ्ठलवर पामी, भले मळ्या जेरामना स्वामी...६

पद-३

पूर्वेनुं पुण्य थयुं ज्यारे, स्वामिनारायण मळ्या त्यारे...१
नेणे मोहनवर नीरख्या ज्यारे, पूरण काम थयुं मारु त्यारे...२

प्रेमे करी मंदिर पधराव्या, श्यामसुंदरवर मनडेरे भाव्या...३
नीरखी नारायण मूर्ति ज्यारे, त्रिविधि ताप टाळ्या मारा त्यारे...
केशर चंदन कर्युं छे भाले, हसतां सुंदर खाडा पडे छे गाले...५
कानमां कुंडळ मकराकृत शोभे, जेराम कहे मन जोई जोई लोभे...६

पद-४

शिर पर केश शोभे अतिसारा, मोहनवर मारी आंख्योना तारा...१
भ्रुकुटी कुटील शोभी रही सारी, जोई जोई मोही सर्वे व्रजनारी...२
हैया पर हार पहेर्या वनमाळी, भ्रमर आवे ते सुगंधने भाळी...३
श्री घनश्याम शोभे अति सारा, जाणे ऊग्या आकाशमां तारा...४
नाभि नौतम ऊंडी छे भारी, ब्रह्मा बेसे त्यां आसन वाळी...५
जानु जुगल शोभे अति सारा, जेराम कहे देखे दास तमारा...६

मावदाननां किर्तनो

डंको दीधो तें वीरा वाछरा (ए राग)

आज सो सो वर्षोनां वाणां वाई गयां,
तोये जाणे हजु काल सवारनी वात रे, सहजानंद स्वामी
गढपुर जोतां श्रीजी सांभरे, (मने गढपुर जोतांज)...टेक०

एनो ए दरबार एना ए ओरडा,
एना ए तोरण चाकळा हिंडोळाखाट रे...सहजानंद स्वामी० १
एना ए लींबडो ने अक्षर ओरडी,
एना ए गादी तकिया रंगतपाट रे...सहजानंद स्वामी० २
साधु ब्रह्मचारी पाळानी साथमां,
खांतीलो आंही खेलतां रंग खेले रे...सहजानंद स्वामी० ३
आज सूनो दरबार सूना ए ओरडा,
सूना दीसे आज घेला नदीना घाट रे...सहजानंद स्वामी० ४
लक्ष्मीवाडी लाडीला लालनी,
पोढ्य जीयां ताळतीयो मुज प्राण रे...सहजानंद स्वामी० ५
गंगाजळीयए हरिने गोतीया,
जळ शय्यामां जोया जीवन प्राण रे रे...सहजानंद स्वामी० ६
गुणियल मूर्ति रे गोपीनाथनी,
दर्शन कर्ये शान्त दिल थाय रे...सहजानंद स्वामी० ७
मागे कर जोडी मावदानजी,
श्रीजी सदाये करजो मारी सहाय रे...सहजानंद स्वामी० ८

मारे सासरीए जईने - ए राग

आज कळियुगमां परचा पूरे प्रभुजी, स्वामिनारायण सत्य छे.
प्रेमी भक्तोनी हामुं पूरे प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक०

जामनगर जात्रानुं धाम छे, स्वामी मंदिरमां श्री घनश्याम छे,
दीधो परचो पोष सुदी एकादशी प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० १

विप्र कन्या झवेरबाई नाम छे, कच्छ पियरने सासरुं आ गाम छे
भावे भजती एकलडी नित्य प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० २

पूर्व कर्म मटे केम भावि, थयो झामरने आंखे खोट आवी,
थाय पीडा अंगो अंग सहाय करजो प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ३

वैद्य डोकटरोने आंखडी बतावी, सहुए ओपरेशन करवा समजावी,
छेडाव्रत आज छूटे लाज राखो प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ४

दर्शन एकादशीने दिन दीधुं, वहाले वनितानुं रुप धरी लीधुं,
फर्या प्रदक्षिणा प्रेमी भक्त साथे प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ५

हरि नाख्युं टीपुं निज हाथे, महा अमृतमय हाथ मूकी माथे,
दुःख काप्युं सुख आप्युं दीनानाथे प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ६

प्रेमदानी पीडा सर्वे टाळी, थया वनिता रुपे वनमाळी,
थया भेचक वैद्यो आंख भाळी प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ८

मूर्ख लोको आ वात नहि माने, जुओ आंखे जई सांभळो शुं काने,
खरी खात्री करी छे ''मावदा''ने प्रभुजी,
स्वामिनारायण सत्य छे...टेक० ८

प्रार्थना पद

श्रीजी महाराज मागुं शरण तमारुं, वहारे वहेला अमारी आवजो,
सहजानंद वहेला पधारजो टेक०

आरे संसारमां अनेक उपाधि, त्रिविध ताप बळे आधिने व्याधि,
तेथी बहुनामी बचावजो...सहजानंद० १

दुरिजनी आ मळी दुःख बहु दे छे, नहि कहेवानां वचनो कहे छे,
एनां अभिमान उतरावजो...सहजानंद० २

अमारे मन एक तमारी टेक छे, अम जेवा तो प्रभु तमने अनेक छे,
पोतानो जाणी नीभावजो...सहजानंद० ३

मागे कवि मावदाव मदद तमारी, अलबेला सहाय करजो अमारी,
मुक्त मंडळने साथे लावजो...सहजानंद० ४

धीरुभानुं प्रभातियुं

गढपुरनुं कीर्तन

दादाने दरबार जाशुं, सवारमां नित्य ऊठीने,
मावानुं मुखडुं जोशुं, सवारमां नित्य उठीने टेक०

हरशुं फरशुं ने स्मरण करशुं, मावानुं मुखडुं जोशुं सवारमां ०
संतो कहे ते सेवा रे करशुं, कहेशे तो संजवारी लेशुं सवारमां ०
गोपानाथजीना गुणला गाशुं, हाथ जोडीने ऊभा रे शुं सवारमां ०

हरिकृष्णजीने हेतेथी मळी, संसारमां शीदने भळीए सवारमां ०
माताजी पासे मागीने कहीए, बाळकोनी खबरुं लईए सवारमां ०
वासुदेवजीने वारणे जईए, अमे तमारा एम कहीए सवारमां ०
धर्मभक्तिने भाळीने कहीए, हवे जावा नव दईए सवारमां ०
रेवतीजीने हृदयमां धरीए, सूर्यनारायण समरीए सवारमां ०
जदुपतिने जोवाने सारु, पासे छे बळराम भैए सवारमां ०
आ दश मूर्तिनुं जे दर्शन करशे, भवथी पार ऊतरशे सवारमां ०
लींबतरुनी लाला संभारीए, श्रीजीनुं ध्यान नित्य धरीए सवारमां ०
घेला नदीना घाटने जोई, स्नानविधि अनुसरीए सवारमां ०
आ दश मूर्ति रहो मुज आगे, धीरुभा एम नित्य मागे सवारमां ०

स्वयंप्रकाशनुं कीर्तन

पद -१

कोई कोईनुं नथी रे, कोई कोईनुं नथी रे,
अल्या नाहकनां मरो बधां मथी मथी रे... कोई० १

मनथी मानेल कहे बधाय मारां, मानी ले जीवडा तारा के मारा,
स्वार्थ विना प्रीति कोई करतुं नथी रे... कोई० २

आ मारी दीकरीने आ मारी मात छे, आ मारी घरवाळीने आ मारो बाप छे,
मुआनी संगाथे कोई जतुं नथी रे... कोई ०३
जननी जनेताए जन्म रे दीधो, पाळी पोषीने तने मोटेरो कीधो,
परण्या पछी माता सामुं जोतो नथी रे... कोई० ४
केटलांक गयां ने केटलांक जवानां, ना कोई रह्या ने ना कोई रहेवानां,
गया एनां कोई समाचार नथी रे... कोई ० ५
स्वयंप्रकाश कहे हरिने भजील्यो, मानवनो देह मळ्यो फेरो सुधारी लो,
तारा साचा संगाथी प्रभु विना नथी रे... कोई० ६

गोपाल भक्तनां कीर्तनो

राग : गरबी – पद –१

एक समे अमदावादमां आव्या श्याम सुजाण,
मूर्ति शोभे महाराजनी ऊग्या सूरज भाण ...१

नवधरुं शिरे शोभतुं, जाणे रविनो भास,
जोईने मोही सुरवनिता, विमान छायां आकाश ...२

मेघाडंबर हरि उपरे, ईन्द्रे धर्यो ते वार,
चंदन पुष्पनी वृष्टि करे ब्रह्मादि देव अपार ...३

केसर तिलक सोहामणुं, शोभे भाल विशाल,
नासा भ्रृकुटि वांकडी, गाले टीबडीनो ताल ...४

शोभे अधर अति रातडा, मांही मधुरीहास,
दास गोपाल कहे, दंतपंक्ति करे प्रकाश ...५

पद–२

कुंडल पहेर्या कानमां, नेत्र अणियाळां लाल,
कंठे कौस्तुभमणि शोभतो, पहेरी मोतीडानी माळ ...१

बांये बाजुबंध बेरखा, हेमकडां बे हाथ,
पहेरी सोना केरां सांकळा, शोभे त्रिभुवन नाथ ...२

जामो जरीनो जादवो, पहेर्यो अमुली सार,
खंभे रेंटो गुढा रंगनो, गळे गुलाबी हार ...३

कमर कटारो वांकडो कर्यो विहारीलाल,
नाडी लटके रुडी हीरनी, सोनेरी सुरवाल ...४

तोडा पहेर्या सोना तणा, पहेरी मोजडीयुं पाय,
दास गोपाल कहे, जोईने अंतर आनंद थाय ...५

पद–३

आगे अस्वारीने आंबलो, वांसे मुनिनां वृंद,
पडखे पाळानां जोडलां, मध्ये शोभे जगवंद ...१

छत्रनी शोभा शिर पर, चमरना झोकार,
निशान नेजा अब्दागरी, नेकी करे पोकार ...२

भेळ भुंगळ ने वांसळी, मृदंग पडघम सार,
ढोल नगारां गडगडे, वाजित्रनो नहि पार ...३

सामैयां लैने शामने, आव्या हरिजन साथ,
थाळ भरीने मोतीये वधाव्या दीनोनाथ ...४

आसुरी लाग्या बळवा, छाती फूटे बहु पेर,
दास गोपाल कहे ऊलटां, खूणे खातर पड्यां घेर ...५

पद–४

एवी शोभाने घारता, आवे मनोहरलाल,
अमृतनी दृष्टि करे, सौने वधारे वा'ल ...१

चौटामां चाल्या शामळो, भीड मची भरपुर,
गुणीजन भेट्य लैने, आव्या हरिने हजूर ...२

मेडी झरुखे जाळीये, चडी हेरे पुर नार,
पुष्प वेरे पारिजातनां, छांटे चंदननी गार ...३

नगरशेठ हेमाभाई तेनी माताये घेर,
सोनाना फूलडे वधावीया, शामसुंदर बहु पेर ...४

पुर वासी पावन करी, आव्या मंदिरमां आप,
दास गोपाल कहे बाळीयां, कोटीजनमनां पाप ...५

पद-५

बेठा सिंहासन उपरे, सहजानंद सुख धाम,
चारे कोरे सखा शोभता, वच्चे छबीलो श्याम ...१

दुर्लभ साहेब आवीया, काने सुणी भगवान,
बली राजनी रीत्ये, अरप्युं भूमीनुं दान ...२

प्रभु पात्र पोते मळया, सहजानंद सुजाण,
सूर्य चंद्रनी साख्ये, अर्पी भूमि परमाण ...३

आशीर्वाद आपी करी, दीधो अभेवर आम,
मुलकनो पादशाह जंद्रेल, पमाडच्य अक्षरधाम ...४

करुणासागर कृपा करी, दीधो अभेवर सार,
दास गोपाल कहे टाळया, जमपुरीना मार ...५

पद-६

श्रीपुर मध्ये सोभतुं, प्रथम करीने धाम,
पोते मळी पधरावीया, नर नारायण नाम ...१

विप्र चोराशी नातना, तेडावीने ततकाळ,
सामान लई गंज मारीयो, जईने कांकरियनी पाळ ...२
सीधां साकरनां शामळे, आप्यां करीने प्यार,
जतन करीने जमाडीया, विप्रनां जूथ अपार ..३
कांकरिये देरा ताणीया, सो सो गाउनी सीम,
दळ दीसे रळियामणुं, मांही छे अर्जुन ने भीम ...४
पुरनो राजा आवीयो, अश्वारी लई ते वार,
दास गोपाल कहे परीक्रमा, करे छे वारमवार ...५

पद-७

नाहीने कांकरीयानी नीरमां, सखा सहित ततकाळ,
आवीने मेमदावादमां, बेठा जमवाने थाळ ...१
अगणित असुरो आवीया, करी नगारे ठोर,
मारो मारो शब्द करी, करे कलोहल जोर ...२
वृष्टि करे तीखां बाणनी, नाखे बंधुक जंजाळ,
जमी ऊठी घोडे चडी, स्वामी गया वहेलाळ ...३

आज्ञा आपी युद्ध करो, मारो जेम तेम थाय,
अगणित फोजो वांसे जोई, असुर भाग्या जाय ...४
दांतोमां खड लई भागीया, नाखी दीधां हथियार,
दास गोपाल कहे मुखीया, मारी नांख्या बेचार ...५

पद-८

संवत अढार ब्यासीये, रंग करीने सार,
नांख्यां संतोना उपरे, थाळीयो भरीने अपार ...१
रसबस कीधां रंगमां, साधु पाळा हरिजन,
नांखे गुलाबनी झोळीयुं, ते पर त्रिभुवन ...२
ताकी मारे पिचकारीयो, मुख उपर अलबेल,
कीचड थयो भूमि उपरे, चाली छे रंगनी रेल ...३
केसरिया थयो घनश्यामजी, अश्वे चडी बलवीर,
चाल्या सखाना संगमां, न्हावा गंगानां नीर ...४
हाथी घोडा रथ पालखी, साधु पाळानी भीड,
दास गोपाल कहे ऊतर्या, जईने साबरने तीर ...५

पद-९

रंग भरेला लालजी, जळमां झीले बळवीर,
रातां थईने वहेवा लागीया, साबरमतीनां तीर ...१
पोते गंगाजी आवीया, मुरतिमान साक्षात्,
हाथ जोडीने हरि आगळे, कहे पूरवनी वात ...२
तमारा चरणेथी शामळा, नोखी पडी बहु काळ,
संत सहित कृपा करी, आज मळया गोपाळ ...३
गंगाने चरणे निवास दई, अश्वे थया असवार,
मंदिरमां संतने जमाडीया, धेबर मोतैया अपार ...४
भूमिका भरत खंडनी, तेमां उत्तम आ शहेर,
दास गोपाल कहे स्वामी, फर्या छे घेर घेर ...५

भक्तकवि वसंतना कीर्तनो

(महीडानां दाण अमे नहि दईए रे लोल ए राग)

नीरखी नयणाने तृप्ति ना वळे रे लोल,
मूर्ति माधुरी एनी रम्य रे
श्रीजीना स्नेह मने सांभरे रे लोल...टेक०

दयानां भरेल एना दिलडां रे लोल,
आंखडी भरेल अमीरेल रे....श्रीजीना० १

घोडले चडीने घेला परवरे रे लोल,
खांते खेले ते नीरमांय रे....श्रीजीना० २

गढपुर गाम केरे गोंदरे रे लोल,
झंखती जुए जन-भीड रे....श्रीजीना० ३

दादाने दरबार दीपता रे लोल,
ढोलिया ढळावी बेसे बहार रे....श्रीजीना० ४

फरती फळीमां एक लींबडी रे लोल,
छायामां जामे भक्तभीड रे....श्रीजीना० ५

तुलसीनी माळा मागी फेरवे रे लोल,
खेंचे तोडीने कोई दिन रे....श्रीजीना० ६

गाये वाजिंत्र साथ मंडळी रे लोल,
चपटी वगाडी वालो गाय रे....श्रीजीना० ७

आंटो लईने अलबेलडो रे लोल,
डोले मगन सुणी मर्म रे....श्रीजीना० ८

आपी आशिष राजी थई जता रे लोल,
संतने भेटे ते भरी बाथ रे....श्रीजीना० ९

दया धरीने थता आकळा रे लोल,
देवाने अन्न धन वस्त्र रे....श्रीजीना० १०

झडीए ते ब्रह्मरस वर्षतो रे लोल,
झीलीने झीलावे वसंत रे....श्रीजीना० ११

मावदाननां कीर्तनो

राग : लावणी

श्रीजी अने सहुं संतो रे, मळी करजो मारी सहाय,
हुं छुं तमारे शरण रे, पुरुषोत्तम लागु पाय...श्रीजी ० टेक०

हुं अनंत भवमां भटक्यो, आवी ईयांरे अटक्यो,
खरी रीते राखी खटको, छोगाळा करजो छूटको रे..पुरु०१

नथी गयो हुं गंगा काशी, तेणे अंतर नथी उदासी,
नक्की अक्षरधामनिवासी, में ओळख्या अविनाशी रे..पुरु०२

मुने मल्या सहजानंद स्वामी भांगी, जन्मोजन्मनी खामी,
नारायण छो बहुनामी, उगारो अंतर्यामी रे...पुरु०३

प्रभु पूरण प्रजाळी पापो, स्थिर अक्षरधामे स्थापो,
कहे मावदान दु:ख कापो, अमने अक्षयसुख आपो रे..पुरु०४

देवानंद स्वामीनां कीर्तनो

राग : गरबी पद - १

भज्यो नहि भगवानने रे, मळ्यो माणसनो देह,
प्रीत करी परनारमां हां रे नीच सोबत स्नेह...भज्यो० १
मिथ्या मायाना जोरमां रे, थयो अंध अजाण,
लाजे वींटाणो लोकनी, हां रे करे आप वखाण...भज्यो० २
चिंता घणी चित्तमां भरी रे, हाल भूंडा हेरान,
फुटेल हैयुं ने फेल आवडे, हा रे मीथ्या मोटपनुं मान...भज्यो० ३
जूठाबोलो नथी जाणतो रे, माथे मरवानी घात,
देवानंद कहे जम आवशे, हां रे मार मूरख खाय...भज्यो० ४

पद-२

अंते जावुं छे एकला रे, संगे आवे नहि कोई,
मातपिताने भाई दीकरा, हां रे नारी कूटे छे रोई...अंते० १
भुखेमरीने भेळी करी रे, माया लाख करोड,
दाटी कहेशे दरबारमां, हां रे जोने आंख्युं फोड...अंते० २
जीव संगाथे जाय छे रे, पुण्य पोतानां पाप,
सुखदु:ख फळ तेनां बोगवे, हां रे जमपुरीमां आप...अंते० ३
राजा धर्मनी आगळे रे, खाशो मुरख मार,
देवानंद कहे देह धारशो, हां रे लक्ष चोरासी वार...अंते० ४

पद-३

भूली गयो भगवानने रे, गयुं जोबन बाळ,
आव्युं बुढापण अंगमां हां रे, केडे आवे छे काळ...भूली० १
घरना माणस जाणे घेलडो रे, कोई माने नही वात,
अक्कल घटीने वधी आपदा, हां रे केदी मरशे कुजात...भूली० २
मनमां अति धन धाखडी रे, व्हाला विषय विकार,
आडाबोलो अफीणीओ, हां रे दुःख पामे अपार...भूली० ३
शरीरनुं चामडुं सुकाई गयुं रे, थयो अंध बधीर,
देवानंद कहे हरि न भज्या, हां रे बहुनामी बळवीर...भूली० ४

पद-४

प्रभु भजी लेने प्राणिया रे, धन दोलत ने नार,
अंते जावुं तजी एकलां, हां रे सगां कुटुंब संसार...प्रभु० १
जेणे भज्या जगदीशने रे, भव पाम्या ते पार,
एने विसारीने आथडे, हां रे गोथां खाशे गमार...प्रभु० २
लक्ष चोराशी जातना रे, आवे देह अपार,
जन्मरमण गर्भवासनुं, हां रे दुःख वारंवार...प्रभु० ३
वैद्य कोटी वांसे फरे रे, करे औषध अनेक,
रंच न टाळे रोगने, हां रे देवानंद कहे विवेक...प्रभु० ४

राग : राग गरबी - पद - १

हैयाना फूट्या हरि संगे हेत न कीधुं, टेक०
लखचोराशी केरुं लगडुं, ताणी माथे लीधुजी हैयाना० १
पेटने अर्थे पाप करतां, पाछुं फरी नव जोयुंजी,
चार दिवसना जीवतर सारुं, मन मायामां मोह्युंजी हैयाना० २
जन्ममरण दुःख गर्भवासनुं, ते नव शकियो टाळीजी,
मात पिता युवती सुत संगे, विसार्या वनमाळीजी हैयाना० ३
आळशने अज्ञान अतिशे, काम बगाड्युं तारुंजी,
देवानंद कहे देख विचारी, मान कह्युं तुं मारुं जी हैयाना० ४

पद-२

दुनियामां डाह्यो डहापणमां दुःख पामे टेक०
भवतारण भगवान विसारी, चडियो ठाले भामेजी दुनिया० १
मनुष्य देह मळ्यो अति मोटो, खोटो जाणी खोयोजी,
चोरे चौटे जुठुं बोल्यो, नाहक नीर वलोयीजी दनिया० २
हरि हरिजन संगे हेत न कीधुं, पीधुं विखनुं पाणीजी,
सुश संसारी पाम्या सारु, मुवा लागी घर ताणीजी दुनीया० ३
हर्ष शोकनी नदीओ मोटी, तेमां जाय तणाणोजी,
देवानंद कहे हरि भज्या नहि, घणे दुःखे घेराणोजी दुनिया० ४

पद-३

अज्ञानी तारा अंतरमां देख विचारी. टेक०
अंतसमे कोई काम न आवे, सगां कुटुंब सुत नारीजी...अज्ञानी० १
जोबन धननुं जोर जणावे, फाटी आंखे फरतोजी,
काळ कराळ कठण शिर वेरी, दिलमां केम नडी डरतोजी..अज्ञानी० २
माल खजाना मंदिर मेलीं, मुवा भूप मदामाताजी,
श्वान शूकरना देह धरीने, घर घर गोथां खाताजी..अज्ञानी० ३
आज अमूलख अवसर आव्यो, हरि भजवानुं टाणुंजी,
देवानंद कहे देह मनुष्यनो, न मळे खरचे नाणुंजी...अज्ञानी० ४

पद-४

पामर तें प्राणी विसार्या वनमाळी. टेक०
मिथ्या सुखमायामां मोह्यो, मृगतृष्णा जळ भाळीजी ...पामर० १
आठपहोर अंतरमां बळीओ, घणा घणाने धायोजी,
रळी खपी धन भेळुं कीधुं, ना खरच्यो ना खायोजी ...पामर० २
नारी आगळ निर्लज थईने, बीतो बीतो बोलेजी,
हडकलावे हसी बोलावे, करे तृणने तोलेजी ...पामर० ३
सासु ससरो सगा संबंधी, तेनी सेवा कीधीजी,
देवानंद कहे साधुजननी, तें सेवा तजी दीधीजी ...पामर० ४

राग : गरबी - पद - १

कर प्रभु संगाथे दृढ प्रीतडी रे, मरी जावुं मेलीने धनमाल,
अंतकाळे सगुं नहि कोईनुं रे टेक०
संस्कारे संबंधी सर्वे मळ्या रे, ए छे जूठी माया केरी जाळ ...अंत० १
मारुं मारुं करी धन मेळव्युं रे, तेमां तारुं नथी तलभार ...अंत० २
सुख स्वप्न जेवुं छे संसारनुं रे, जेने जोतां न लागे वार ...अंत० ३
माटे सेवे तुं साचा संतने रे, तारा टळशे त्रिविधिना ताप...अंत० ४
अति मोटा पुरुषने आशरे रे, बळे पूर्वजन्मनां पाप...अंत० ५
एवुं समजीने भज भगवानने रे, सुखकारी सदा धनश्याम...अंत० ६
देवानंदनो व्हालो दुःख टाळशे, मनवांछित पूरणकाम...अंत० ७

पद-२

मळ्यो मनुष्यनो देह चिंतामणी रे, तारा अंगमां छे रोग असाध्य
नथी लेतो नारायण नामने रे. टेक०
माथे जन्ममरणा मोटुं दुःख छे रे, तारा अंतरमां हरिने आराध्य...नथी० १
धणुं सूझे छे काम संसारनुं रे, करे सगानुं नित्य सन्मान...नथी० २
हेत करतो नथी हरिदासमां रे, हैयाकूट्या तुं लूणहराम...नथी० ३

परनारी संगाथे करी प्रीतडी रे, तारो एळे गयो अवतार...नथी० ४
बहुनामीनी बीक नथी राखतो रे, खरे खाते मळीश खुवार...नथी० ५
अति कठण वेळा छे अंतकाळनी रे, पछे थाशे तने पस्ताव...नथी० ६
देवानंदनी शिखामण मानजे रे, तारा अंतरमां करीने उछाव...नथी० ७

पद-३

तारा मनमां जाणे मरवुं नथी रे, एवो निश्चे कर्यो निरधार,
तेमां भूली गयो भगवानने रे ...टेक०
धनदोलत नारी ने घणा दीकरा रे, खेतीवाडी घोडी ने दरबार...तेमां० १
मेडी मंदिर जरुखा ने माळियारे, सुखदायक सोनेरी सेज...तेमां० २
गादी तकियाने गालमसुरीयारे, अति आड करे छे एज...तेमां० ३
नीचुं कांध करीने नमतो नथी रे, एवुं संगाथे अभिमान...तेमां० ४
मरमाळी मोहनजी मूरति रे, तेनी साथे न लागेल तान...तेमां० ५
पाप अनेक जन्मनां आवी मळ्या रे, तारी मति मलिन थई मंद...तेमां० ६
देवानंदना वहालाने वीसरी गयो रे, तारे गळे पड्यो जमफंद...तेमां० ७

पद-४

तारे माथे नगारां वागे मोतनां रे, नथी एक घडीनो निरधार,
तोय जाण्या हरि जगदीशने रे... टेक०
मोटा मेलीने राज मरी गयो रे, जोने जातां न लागे वार...तोय० १
तारुं जोबन गयुं जख मारतुं रे, माथे काळा मटी गया केश...तोय० २
अंतकाळे लेवाने जन आविया रे, तेनो भारी भयंकर वेश...तोय० ३
रोम कोटी वींछी तणी वेदना रे, दुःख पाम्यो तुं देवना चोर...तोय० ४
सगां स्वार्थी मळ्यां सहु लूंटवा रे, के नुं जरा न चाले जोर...तोय० ५
जीभ टुंकी पडी ने तुटी नाडीओरे, थयुं देह तज्यानुं तत्काळ...तोय० ६
देवानंद कहे न जाण्या मारा नाथने रे, मळ्यो माणसनो देह विशाळ...तोय० ७

राग : चाबखो - पद - १

आवुं तारुं धन रे जोबन धूळ थाशे, कंचन जेवी काया ते राखमां रोळाशे
टाढा ऊना रे तुंने ताव ज आवशे, ने वसमुं थई विताशे,
दातण पाणी ने नाह्या विना तारी देह, बधी गंधाशे रे ...आवुं० १
बोलवा चालवा नहीं दीए प्राणी तारी जीभलडी झलाशे,
श्वास चडसे ने आंखो फरकशे, नाकनी ते डांडी नमी जाशे रे...आवुं० २

वैद्य तेडावे एनी नाडी जोवरावे, कडवां ते औषध पाशे,
तूटी एनी बूटी नहीं मळे एना, जीवनी शी गति थासे रे...आवुं० ३
एक बिजा विना घडीए न चाले, ते तारी त्रिया तो रंडाशे,
जुगो रे जुगनुं छेटुं पड्युं प्राणी तारा, नामनी ते चूडीओ भंगाशे रे...आवुं० ४
खोखली दोणीमां तारी आग ज काढशे ने, मसाणे लाकडां लेवाशे,
सधळु कुटुंब तने सळगावी दई पछी, बारमाना कागळो लखाशे रे...आवुं० ५
दश दिवस तारु सूतक पाळशे, ने दाडी ने मूछ मूंडाशे,
सघळुं सूतक तारुं काढी नाखीने पछी, बारमानां सुखडा खवाशे रे...आवुं० ६
दया धर्म ने भक्ति विना तारुं, सघळुं द्रव्य लुंटाशे,
देवानंद कहे हरि भज्या विना जम, छोटां मोटाने लई जाशे रे...आवुं० ७

प्रीतमनां कीर्तनो

राग : धोळ

संत पारस चंदन बावना, कामधेनु कल्पतरु सार...समागम संतनो० १
संत समज्यामां अंतर धणो, तरु पारस त्रण प्रकार...समागम० २
एक पारसथी पारस बने, एक पारसथी हेम होय...समागम० ३
एक पारस लोहने कुंदन करे, सो वर्षे लोह नव होय...समागम० ४

अंक चंदनथी वीष ऊतरे, एक चंदनथी असि ओलाय...समागम० ५
एक तलभार ताता तेलमां, फरी तेल तातुं नव थाय...समागम० ६
सर्वे सेना सूरी नव जाणीये, सर्वे नारी पतिव्रता न होय...समागम० ७
सर्वे गजशिर मोती न नीपजे, नागे नागे मणि नव होय...समागम० ८
मृगे मृगे कस्तूरी न नीपजे, वने वने अगर नव होय...समागम० ९
जळे जळे कमळ नव नीपजे, तेनी विक्ति विचारीने जोय...समागम० १०
ज्ञानहीन गुरु नव कीजीये, वंध्या गाय सेवे शुं था...समागम० ११
कहे प्रीतम ब्रह्मवेता भेटतां, महारोग समूळो जाय...समागम० १२

राग : धोळ

संगत तेने शुं करे, जईने कुबुद्धिमां धरे कान...संगत० टेक०
मरी कपूर बेउ भेगां रहेतां रे, निरंतर करी एक वास,
तोय तीखाश एनी न टळी रे, एनी बुद्धिमां नाव्यो बरास ...१
चंदन भेळो वींटीने रेतो रे, रात दिवस भोयंग
तोय कन्ठेथी विष न गयुं रे, एने न आवी शीतळता अंग ...२
राणी ने दासी भेगां रहेतां रे, जमतां नित्य करी प्रीत,
तोये शाणी समजी नहीं रे, एने न आवी राजकुळनी रीत ...३

मोटो खर एक बांधियो रे, राज तणी घोडशाळ,
बोली ठोलीतो बदली नहीं रे, चंदी खातो तो हार ...४
दादुर रहेतो तळावमां रे, नित्य कमळ सुपास,
कलबल करतो कीचमां रे, एने न कमळनी सुवास ...५
पत्थर रहेतो पाणीमां रे, ऊंडो करीने निवास,
प्रीतम कहे टांकणे तणखा झरे रे, एने न लाग्यो पाणीनो पास ...६

प्यारी लागे मूर्ति तमारी

मने प्यारी लागे मूर्ति तमारी,
घनश्यामजी प्यारी लागे मूर्ति तमारी...टेक०
कुंकुमनो चांदलोने भाले तिलक वच्चे,
हरि तमे भाळोने भ्रमणा भुलावी...घनश्यामजी०
काने कुंडळ हरिने माथे मुगट शोभे,
हरि कंठे धारी माणेक जडी माळा...घनश्यामजी०
जामो जरियानी पहेर्यो सोनेरी सुरवाळ छे,
हरि तमारी केडे कस्यो छे कंदोरो...घनश्यामजी०
मूर्तिमां मग्न थई चरणोमां चित्त दई,
हरि जाय दास नारायण वारी...घनश्यामजी०

श्री नारायणकवचम् मंत्र

ज्यारे कोई पण प्रकारनो भय आवे, त्यारे स्नानादिकक्रीयाथी पवित्र थईने, एकाग्रचित्तथी श्रीहरिना स्मरणसहित, नारायणकवचनो पाठ करवो. नारायणकवच नामनुं आ कवच (बख्तर) देवोना पुरोहित विश्वरुपे, ईन्द्रने रक्षण आपवा माटे क ह्युं हतुं. ईन्द्र आ नारायणरुपी बख्तर पहेरीने वृत्रासुर सामे लड्या हता अने विजयी नीवड्या हता. श्रीजी महाराजे आ कवचनो पाठ करवानी आज्ञा पोताना आश्रितोने शिक्षापत्री श्लोक ८५मां करी छे.

आ वचननां विश्वरुपी ऋषि त्रिष्टुप तथा अनुष्टुप छंद छे. श्री नारायण तेना देवतां छे. आवा स्तोत्रनो हुं मारा समग्र उपद्रवनी शांतिने अर्थे, जप करुं छुं एवो संकल्प करी, पोताने प्रिय, ऐवा ईष्टदेवना स्वरुपनुं ध्यान करवुं अने त्यारबाद नीचेना नारायणकवच मंत्रनो पाठ यथाशक्ति करवो.

''श्री नारायणकवच मंत्र''

अणिमादिक आठ सिद्धिवाळा अने शंख चक्रादि आयुधो धारण करनारा श्रीहरि भगवान, के जेमणे गरुड उपर विराजमान थई, हाथीनुं मगरथी रक्षण कर्युं हतुं. ते भगवान मारी सर्व प्रकारे रक्षा करो.

मत्स्य अवतार धारण करनारा भगवान, मारी जळमां रक्षा करो. बटुकवेश धारण करनारा वामनजी भगवान मारुं पृथ्वी उपर रक्षण करो. अने त्रिविक्रम भगवान, आकाशमां मारी रक्षा करो.

भयंकर अट्टहास्यथी दिशाओने गजवनार, हिरण्यकशिपु जेवा दैत्योना शत्रु अने सर्वसमर्थ एवा नृसिंहजी भगवान, मारुं जंगलमां तथा युद्धमां रक्षण करो. पोतानी दाढ वडे, पाताळमांथी पृथ्वीनो उद्धार करनार, यज्ञमूर्ति वराह भगवान, मारी मार्गमां रक्षा करो. परशुराम भगवान, पर्वतना शिखरोमां मारी रक्षा

करो अने लक्ष्मण तथा भरतजीना मोटा भाई रामचंद्र भगवान मारी प्रवासमां रक्षा करो.

नारायण भगवान, अभिचार (उग्रधर्म) तथा आळस प्रमादथी, मारुं रक्षण करो. उन्मातथी तथा गर्वथी नर भगवान मने बचावो. दत्तात्रेय भगवान, परमात्माना स्वरुपनुं विस्मरण थवारुप दोषथीमारुं रक्षण करो. अने सांख्य शास्त्रना आचार्य कपिल भगवान कर्मना बंधनथी मारी रक्षा करो सनत्कुमार भगवान कामदेव थकी मारीरक्षा करो. हयग्रीव भगवान मार्गमां जतां, देवताना अनादररुप अपराधथी, मारी रक्षा करो. देवर्षिवर्य नारदजी भगवाननी भक्ति करवामां थता अपराधथी, मारी रक्षा करो, कूर्मावतार श्रीहरि भगवान, नरकथी मारी रक्षा करो.

रोगजनक कुपथ्य खावाथी थती पीडाथी धनवंतरि भगवानमारुं रक्षण करो. भूख-तरस, शीत-उष्ण, मान-अपमान आदिक द्वन्द्वथी थता भयमांथी,

ऋषणभदेव भगवानमारी रक्षा करो. यज्ञअवतार भगवान लोकापवादथी मारुं रक्षण करो. बलभद्र भगवान, मनुष्य तरफथी थता उपद्रवोमांथी मारी रक्षा करो. क्रोधरुपी सर्पथी शेषनारायण मारी रक्षा करो. भगवान देवव्यास अज्ञान थकी मारी रक्षा करो. पाखंडी लोकोथी बुद्ध भगवान मारुं रक्षण करो. अने धर्मनी रक्षा माटे अवतार धारण करनार कल्की भगवान, कळियुगना दोषोती मारुं रक्षण करो..

गदाधारी केशवभगवान मारी प्रातः काळमां रक्षा करो. मोरली वगाडनार गोविंद भगवान मारी संगवकाळमां रक्षा करो. (सूर्यदय पछी छ घडी प्रातःकाळ कहेवाय छे त्यार पछीनी छ घडी संगवकाळ कहेवाय छे) शक्ति (सांग) ने धरनारा नारायण भगवान पूर्वाह्नकाळमां मारुं रक्षण करो अने चक्रधारी विष्णु भगवान मध्याह्न काळमां मारी रक्षा करो. धनुष्यधारी मधुसुदन भगवान अपराह्न काळमां मारी

रक्षा करो. त्रण धाम जेनां छे, एवा माधव भगवान सायंकाळमां मारी रक्षा करो. ऋषिकेश भगवान (ईन्द्रियोना स्वामी) प्रदोष काळमां मारी रक्षा करो. पद्मनाभ भगवान, अर्धरात्री पर्यंत तेमज मध्यरात्री काळमां मारुं रक्षण करो. श्री वत्सनुं चिह्न जेने छे एवा लक्ष्मीकान्त भगवान, पाछली रात्रिमां मारुं रक्षण करो. तलवार धारण करनार जनार्दन भगवान, अरुणोदयना आरंभमां मारी रक्षा करो. दामोदर भगवान, संध्या समीपकाळमां मारी रक्षा करो. काळ मूर्ति विश्वेश्वर भगवान प्रभातमां मारी रक्षा करो.

प्रलयकाळनां अग्नि समान तीक्षण धारवाळा अने भगवाननी प्रेरणाथी चारे तरफ फरनारा, एवा हे सुदर्शनचक्र! जेम अग्नि पवन साथे मळीने घासने बाळे छे, तेम तमो, मारा शत्रु सैन्यने बाळी नाखो, बाळी नाखो, बीजली जेवा तणखा फेरावती हे कौमोदकी गदा ! तुं भगवानने वहाली छे, तो मारा

यक्ष, राक्षस, भूत, बाळग्रह वगेरे शत्रुओनो भांगी भूको करी नाख. भूको करी नांख, श्रीकृष्ण भगवानने वगाडेल हे पंचजन्य शंखराज ! तमो तमारा भयानक अवाजथीप्रेता मातृ पिशाच, ब्रह्मराक्षस वगेरे घोर दृष्टिवाळाओने नसाडी मूको. तीक्ष्ण धारवाळी अने तलवारमां उत्तम हे नंदक ! भगवानी प्रेरणाथी तमो मारा शत्रु सैन्यने कापी नाखो. सो चंद्रवाळी, हे ढाल! तमो उग्र दृष्टिवाळा अने पापी एवा मारा शत्रुओनां नेत्रने ढांकी दो.

वेदमूर्ति समर्थ गरुडजी अने विश्वकसेन मारी सर्वे स्थळ रक्षा करो. भगवानना मुख्य पार्षदो, तेमनां दिव्य नाम स्वरुपो, तथा तेमनां वाहनो आयुधो, अमारा बुद्धि-ईन्द्रिय-मन अने प्राणनुं, सर्व आपत्ति थकी रक्षण करो. समग्र जगत भगवाननुं शरीर छे. अने तेमां भगवान शरीर रुपे रह्यां छे. तेथी खरेखर समग्र जगत भगवानरुप ज छे. आवा सत्यज्ञाथी मारी

सर्व उपद्रवो नाश थाओ. प्रलय अवस्थामां सघळुं जगत सूक्ष्मरुपे भगवानना तेजमां लीन थई जाय छे. त्यारे भगवान एकला ज भासे छे. अने तेज भगवान फरी सृष्टि समये भूषण, आयुध, नाम, रुप, तथा जडचेतन शरीरने, पोतानी माया वडे धारण करे छे, आवुं सत्य ज्ञान मने छे, माटे सर्वज्ञ भगवान पोताना शरीर रुपी सर्व वस्तुओमां रही. सर्व स्थळे निरंतर मारुं रक्षण करो अंतमां महा तेजस्वी नृसिंहजी भगवान सर्व दिशाओमां, सर्व स्थळमां तथा शरीरनी अंदर अने बहार मारुं रक्षण करो.

आ नारायणकवचनो पाठ करनार सर्व भयथी मुक्त थाय छे अने तेनां सर्व मनोरथ सिद्ध थाय छे.

आ प्रमाणे श्रीमद् भगावतना छठ्ठा स्कंधना आठमां अध्यायमां विश्वरुपे ईन्द्रिने कहेल नारायणकवच संपूर्ण थयो.

जनमंगल स्त्रोत्र

नमो नमः श्रीहरये बुद्धिदायदयावते ।
भक्तिधर्माऽगजाताय भक्तकल्पद्रुमाय च ॥१॥
सुगंधपुष्पहाराद्यै र्विविद्यैरुपहारकैः ।
सम्पूजीताय भक्तौघैः सिताम्बरधराय च ॥२॥
नाम्नाष्टोत्तरशतं चतुर्वर्गमभीप्सताम् ।
सद्य फलप्रदां नृणां तस्य वक्ष्यामि सत्यतेः ॥३॥

अस्य श्री जनमंगओलाख्यस्य श्रीहर्षष्टोत्तरशत नामोस्तोत्रमंत्रस्य शतानंद ऋषिः । अनुष्टुप छन्दः धर्मनन्दनः श्रीहरिर्देवता । धार्मिक ईति बीजम् । बहद् व्रतधर ईति शक्तिः । भक्तिनंदन ईति कीलकम् । चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

अथ ध्यानम्

वर्णिवेषरमणीयदर्शनं मंदहासरुचिराननाम्बुजम् ।
पूजितंसुरनरोत्तमैर्मुदाधर्मनंदनमहंविचिन्तये ॥४॥
श्रीकृष्णः श्रीवासुदेवो नरनारायणः प्रभु ।
भक्तिधर्मात्मजोऽजन्मा कृष्णोनारायणोहरिः ॥५॥
हरिकृष्णो घनश्यामो धार्मिको भक्तिनंदनः ।
बृहद्व्रतधरः शुद्रो राधाकृष्णैष्टदैवतः ॥६॥
मरुत्सुतप्रियः कालीभैरववाद्यतिभीषणः ।
जितेन्द्रियो जिताहारस्तीव्रवैराग्य आस्तिकः ॥७॥
योगेश्वरो योगकलाप्रवृत्तिरतिधैर्यवान् ।
ज्ञानी परमहंसश्च तीर्थकृत्तैर्थिकार्चितः ॥८॥
क्षमानिधिः सदोन्निद्रो ध्याननिष्ठस्तपः प्रियः ।
सिद्धेश्वरः स्वतंत्रश्च ब्रह्मविद्याप्रवर्तकः ॥९॥
पाषण्डोच्छेदन पटुः स्वस्वरुपाचलस्थितिः ।
प्रशान्तमूर्तिनिर्दोषोऽसुरर्वादिमोहनः ॥१०॥

अतिकारुण्यनयनः उद्धवाध्वप्रवर्तकः ।
महाव्रतः साधुशीलः साधुविप्र प्रपूजनकः ॥११॥
अहिंसायज्ञप्रस्तोता साकारब्रह्मवर्नः ।
स्वामिनारायणः स्वामी कालदोषनिवारकः ॥१२॥
सच्छास्त्रव्यसनः सद्यः समाधिस्थितिकारकः ।
कृष्णार्चास्थापनकरः कौलद्विट् कलितारकः ॥१३॥
प्रकाशरुपो निर्दभः सर्वजीवहितावहः ।
भक्तिसम्पोषको वाग्मी चतुर्वर्गफलप्रदः ॥१४॥
निर्मत्सरो भक्तवर्मा बुद्धिदाताऽतिपावनः ।
अबुद्धिहृद्ब्रह्मधामदर्शश्चा पराजीतः ॥१५॥
आसमुद्रान्तत्कीर्तिः श्रितसंसृतिमोचनः ।
उदारः सहजानंदः साध्वीधर्म प्रवर्तकः ॥१६॥
कंदर्पदर्पदलनो वैष्णवक्रतुकारकः ।
पंचायतनसन्मानो नैष्ठिकव्रतपोषकः ॥१७॥

प्रगल्भो निःस्पृहः सत्यप्रतिज्ञो भक्तवत्सलः ।
आरोषणो दीर्घदर्शी षड्र्मिविजयक्षमः ॥१८॥
निरहंकृतिरद्रोह ऋजुः सर्वोपकारकः ।
नियामकश्चोपशमस्थितिर्विनयवान् गुरुः ॥१९॥
अजातवैरी निर्लोभो महापुरुषः आत्मदः ।
अखंडितार्ष मर्यादो व्याससिद्धान्तबोधकः ।२०॥
मनोनिग्रहयुक्तिज्ञो यमदूतविमोचकः ।
पूर्णकामः सत्यवादी गुणग्रही गतस्मयः ॥२१॥
सदाचारप्रियतरः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
सर्वमंगलसद्गु पनानागुणविचेष्टितः ॥२२॥
ईत्येतत्परमं स्तोत्रं जनमंगलसंक्षितम् ।
यः पठे त्तेन पठतिं भवेद्वैसर्वमंगलम् ॥२३॥
यः पठेच्छुणायाद्भकत्या त्रिकालं श्रावयेच्चवा ।
एतत्तस्य तु पापानि नश्येयुः किल सर्वशः ॥२४॥

एतत्संवेवमानानां पुरुषार्थचुष्टये ।
दुर्लभं नास्ति किमपि हरिकृष्णप्रसादतः ॥२५॥
भूतप्रेतपिशाचानां डाकिनीब्रह्मरक्षसाम् ।
योगिनीनां तथा बालग्रहादीनामुपद्रवः ॥२६॥
अभिचारो रिपुकृतो रोगश्चान्यो प्युपद्रवः ।
अयुतावर्तनादस्य नश्यत्येवन न संशयः ॥२७॥
दशावृत्त्या प्रतिदिनमस्याभीष्टं सुखं भवेत् ।
गृहिभिस्त्यागिभिश्चापि पठनीयमिदं ततः ॥२८॥

ईतिश्री शतानंदमुनिविरचित श्रीजनमंगलाख्यं ।
श्री हर्षष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्री हनुमत्स्त्रोत्रम् ॥

भगवान श्री स्वामिनारायणना पिता श्री धर्मदेवने, छपैयामां ज्यारे असुर लोको तरफथी अत्यंत उपद्रव थयो, त्यारे तेमणे अयोध्यामां आवीने पोताना कुळदेव श्री हनुमानजीनी करेली स्तुति

नीतिप्रवीण निगमागमशास्त्रबुद्धे
राजाधिराज रघुनायक मन्त्रिवर्य ।
सिन्दुंरचर्चितकलेवर नैष्टिकेन्द्र
श्री रामदूत ! हनुमन् ! हर संकट में
सीतानिमित्तजरघूत्तमभूरिकष्ट,
प्रोत्सारणैक्कसहाय ! हतास्त्रपौध, !
निर्दग्धयातुपतिहाटक राजधाने, ! श्री रामदुत ०
दुर्वार्यरावणविसर्जित शक्तिघात-
कंठासुलक्ष्मण सुखाहृत जीववल्ले, !
द्रोणाचलानयन नंदितरामपक्षच ! श्री रामदुत ०
रामागमोक्ति तरितारित बंध्वयोग,

दुःखाब्धिमग्र भरतार्पितपारिबर्ह,
रामान्घ्रिपद्ममधुपीभवदन्तरात्मन्, श्री रामदुत ०
वातात्म केसहि मकापिराट्तदिय,
भार्याजनीपुरुतपः, फलपुत्रभाव, !
ताक्ष्यों पमोचितवपुर्बलतीव्रगेव, !
नानाभिचारिक विसृष्टसवीर कृत्या
विद्रावणारुणसमीक्षण-दूःप्र धर्ष्य,
रोगध्न सत्सुतद वित्तद मंन्त्रजाप, श्री रामदुत ०
यन्नामधेयपदक श्रुतिमात्रतोपि,
ये ब्रह्मराक्षस पिशाचगणाश्चभूताः !
तेमारिकाश्च सभयं ह्यपयान्तिसत्वं !
त्वं भक्तमानस समिष्च्छित पूर्तिशक्तो,
दीनस्य दस पत्नभैयर्ति भयार्तिभाजः !
ईष्ट ममापि परिपूरय पूर्णकाम, श्री रामदुत ०

॥ ईतिश्री शतानंद मुनिविरचितं
श्री हनुमत्स्तोत्रं समाप्त ॥